अनुभव की चुनी वाणियाँ

संग्रहकर्त्ता

श्रीमती दुर्गा देवी

सन् १९८०-८१]

मूल्य

अनुभव की चुनी वाणियाँ

संग्रहकर्त्ता

श्रीमती दुर्गा देवी

सन् १९८०-८१] 2563 मूल्य ३)

विषय-सूची

भजन नं० १

गणनायक राजा, राखो सभा में म्हारो मान ॥टेर॥
प्रथम याचना कीनो थासू शरणो लिन्हो आन।
रणत भवन गढ़ आप बिराजो दुनिया धरेगी थारो ध्यान
पढ्या लिख्या मैं ऐसा नाही, ना कोई दूसरो ज्ञान।
कर में कलम रुक गई मेरे, आप करोगे कल्याण
शिवयोगी के पुत्र लाड़ले, जिसका अद्भुत भाल।
मूसे ऊपर करो सुवारी, पार्वती के लाल
सब सेवक "अरदास" करत है चरणों में उबी आप।
हृदय माप करो उजियालो, हरदम उपजे ज्ञान

भजन नं० २

गणपत बलवानी जी
फते मेरी आन करो ॥टेर॥

तुम गणपत जी हो बलकारी
तुमको पूजे सकल नर नारी
प्रथम पूजा होवे तुम्हारी
तुम ज्ञानी धानी जी
सिखर पर वास करो ॥१॥

माता तुम्हारी हैं पार्वती
पिता तुम्हारा है शिव शंकर
दियो वरदान ब्रह्माजी आकर
रिद्धि सिद्धि लाकर जी
हमारा भण्डार भरो ॥२॥
दुंद दुंदाला सुंड सुंडाला
गल सोहे पुष्पन की माला
मुसक वाहन चढ़ो सवारी
मीठी वाणि जी
हमारे कंठ धरो ॥३॥
ज्ञानी ध्यानि दानी बहु तेरा
म तो सरना ले लिया तेरा
पूरण मनोरथ करदो मेरा
रविदत्त रजधानी जी हीय प्रकाश करो ॥४॥

भजन नं० ३

दुन्दाला दुःख भंजना सदा उजाला भेष।
सारा पहली सुमरियों गौरी पुत्र गणेश ॥
रुनक झूनक पग नेवर बाजे गजानन्द नाचे।
गजानन्द नाचे विनायक गणपत जी नाचे ॥

मूसक वाहन सूंड सूंडाला एक दंत साजे ।
कोइ गल पुष्पन को हार विराजे कोटि काम लाजे ।।
पिता तुम्हारा है शिव शंकर नांदेश्वर सांजे ।
माता तुम्हारी है श्री गिरजा सिंह चढ़ी गाजे ।।
विघ्न निवारण मंगल कारण राजन पति राजे ।
तुलसी दास गणपत जी न सुमरया दुःख द्रारिद्र भाजे ।।

भजन नं० ४

थाने मनाऊ म्हारा गणपत देवा
ज्ञान ध्यान का रखवाला
फूल पतासा थारे भेट चढ़ाउ
गले पोप की है माला ।।टेर।।
हर भज—२ हेरले हियेन
मै दुर्बल यारी गत न्यारी
थारा भरोसा भारी हो गजानन्द
लाज शरम राखो म्हारी—।।१।।
यं पाणी के काया न माया
बधे बेल एक फल लाग्यां
देखो रे साधो अजब तमाशा
पाक जद बाहर जाग्यां ।।२।।

यं काया में सात समुद्र
पर घर पानीडा न क्यों डोल
यं काया का पीलेरे पानी
जद हंशला निरभय बोल ॥३॥
भवर गुफा में एक तपसी ताप
बिन अग्नि बिन जल ताप
वं साधु क काया न माया
बिना पाव नौ खण्ड नाप ॥४॥
गरी—२ फोज बनी साधा की
राम नाम धन लूटो रे
कहत कबीर सुनो भाई साधो
या तो मोज लगी भारी ॥५॥

भजन नं० ५

सग चढे वीर हनूमान देवता सारे
थे रिद्ध सिद्ध ले घर आवो गजानन्द प्यारे ॥टेर॥
एक रणके भवन में आप विराजो देवा
थारे लड़वारों भोग चढाय करु मैं सेवा—१
सूवा—सूवा चन्दन मगाय दूरगची मेवा
थार फूलडारों भाव चढाय करूँ मैं सेवा—२

सिंह चढ़ी हिंगलाज हाथ में पोथी
या हों हंस असवाय चुगाया निज मोती—३
देवो में मोटा देव शनिचर राजा
भगतों में पड़ जा भीड़ सवार काजा—४
एक लालदास गुण गावे हरि जी तेरा
मेरी अद्यबीच अटकी नाव पारकर खेवा—५

भजन नं० ६

अम्बे तु है जगदम्बे काली
जै दुर्गा खपर वाली
तेरी उतारे हम आरती
ए अम्बे अमृत वर्षाने वाली
बिगड़ी बनाने वाली
विपता हटाने वाली
संकट मिटाने वाली
तेरी उतारे हम आरती।
ए अम्बे तेरा ही हम गुण गांवती (टेर)
जी मां बेटे का ह इस जग में
वड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत गिणा नहिं माता
माता है सो माता (१)

जी नाहिं मांगता धन ओर दौलत
नहिं चांदी ओर सोना।
हमही मांगते तेरे हृदय का
मां छोटा सा कोना (२)
जी घड़ा भरा है पाप का जी
फैल्या अत्याचार।
आसमायनी अम्बे मां
सदा करो कल्याण (३)
जी हंश चढे ब्रह्मा मिले जी
गरुड चढे भगवान।
सिंह वाहनी अम्बे मां
तेरा ही अपरं पार (४)

भजन नं० ७

म्हारे सत गुरु दिनी रे बताय, दलाली हीरा लालन की ।टेर।
लाल२ सब कोई क हेरे, सबके पले लाल।
खाइन खरची न दइ उधारी किस विध भयो रे कंगाल (१
सबके पले लाल हरे, सबही साउकार।
गाठ खोल देखी नहीं रे, इस विध रहे कंगाल (२)
लाल पड़ी चोगान मेरे, रही कीच लिपटाय।
मुरख जन देखी नहीं रे, चतुरान लइरे उठाय (३)

लालांका कोठा भरारे, लालांका भरा भंडार।
जै कोई गाहक होयसीरे लालांका मोल चुकाय (४)
लाल झडे लोहा झडे रे झड२ पडे अंगीर।
रामानन्द को लाडलो रे, कांकड लडे कबीर (५)

भजन नं० ८

मेरे सत गुरु पकड़ी वांह नहिं तो बह जाती
बह जाती मझधार साधो भाई रूल जाती (टेर)
कर्मं काट कोयला किया रे, उज्वल वर्ण वनाय।
कागा से हंसा किया रे, मोतीडा दिया चुगाय॥
भक्ति बिना युँहीं जाती (१)
दुध और पानी मिला हुआ था देखा एक स्वरूप।
जब सतगुरुने कृपा किनी, न्यारा, दिया रे दिखाय॥
जतन बिना रह जाती (२)
भव सागर की गहरी नदियाँ, डुब रही मजधार।
जव संतो ने किरपा किनी, हाथ पकड कर किनी वार॥
समझ बिना बह जाती (३)
गुरुकी कीरपा ऐसी हमपर, मुअसे वरणी न जाय।
शीश काट दयू तो भी थोड़ा, संतों ने किया उपकार॥
नाथ म रुल जाती (४)

श्रीरामजी

भजन नं० ९

मेरे सतगुरु बोदिया बीज, जतन से रख लेना। (टेर)
हृदय जमी को साफ जू करके, प्रेम के जलसे सींच ज० (१)
उगी वेल उपर चढ़ आई, तनक लगे नहीं कीच ज० (२)
चतुर नार निनानन लागी, मुरखन नहीं तोल ज० (३)
कहत कबीर सुनो भाई साधो, गुरु विन ज्ञान न होय ज० (४

भजन नं० १०

गुरुने मेरे वाण मारा रे

ऐसा वाण मेरे तकर मारा तो तन मन विंध गया सारारे (टेर
कचारी कोट पका दरवाजा तो घायल लाय उतारारे (१)
घायल की कति घायल जाने तो क्या जाने बैठ विचाररे (२)
इस काया बीच सात समुंदर तो कोई मीठा कोई खारारे (३)
इस काया बीच लाल उपजत हैं, तो परखेगा परखन हारारे(४)
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तो हर भज उतरो पारारे (५)

भजन नं० ११

गुरुने मोहिं दिनीह अजब जड़ी (टेर)
सोई जड़ी मोहिं प्यारी लगत है, अमृत रसकी भरी (१)
काया नगर अजब एक वंगला, तामे गुपुत धरी (२)

पांचु नाग पचीस नागनी सुंघत तुरत मरी ॥३॥
या कारने सब जग खायो, सतगुरु देख डरी ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो ले परिवार तरी ॥५॥

भजन नं० १२

मेरे सतगुरु हैं रंगरेज चुनरी मेरी रंग डारी (टेर)
श्याहीरंग घुडायकेरे दियो मजीठी रंग।
धोये से घुटे नहीरे दिन दिन होय सुरंग ॥१॥
भावके कुंड नेहके जल में प्रेम रंग दई बोर।
चसकी चास लगाकेरे, खुब रंगी झक झोर ॥२॥
सत गुरुने चुनरी रंगीरे, सतगुरु चतुर सुजान।
सब कुछ उन पर बार दूरे तन मन धन और प्राण ॥३॥
कहे कबीर रंगरेज गुरुरे मुझ पर हुआ दयाल।
सीतल चुनरी ओढकेरे, भइहों मगन निहाल ॥४॥

भजन नं० १३

जीओ गुरु रामानन्दजी सोच समझ पकडो वहिया (टेर)
जी सुकालकड धुलिया खाया, लोहा खाया जरिया।
हम तो सोदासतका करते, पाखंड पुजा नहियाँ ॥१॥
जी जो बालक खेल झुन झुनियाँ उनमे तो हम नहियाँ।
हमतो भुखा प्रेम भावका गहकर पकडो बहियाँ ॥२॥

जी एक लाख चोरासी सखियाँ उनमे तो हम नहियाँ ।
विन सतगुरु के ज्ञान बिना तो जम घसीटे बहियाँ ॥३॥
जी कहत कबीर सुनो भाई साधो ये पदह निरबहियाँ ।
जो इस पदका अर्थ लगावे लख चोरासी टलियाँ ॥४॥

भजन नं० १४

राम नामका झुन्झुनियां म्हारे सतगुरु म्हाने भला दिया (टेर)
पहला नाम जीह्वासे रटिया, नाभी जा ठहराय लिया ।
नाभी से ऊर्ध मुखकुवाँ, वंकनाल परवेस किया ॥१॥
बंकनालसे उपर धाया, सोहनी सीखर परवेस किया ।
रुण झुण झुण बाजा बाजे, जामे भंवर लुभाय रहा ॥२॥
सोहनी सीखर से उपर छाया, महासुन्य परवेस किया ।
चांद सुरज ज्यूं भयो उजियालो, भरम अंधेरा दूर किया ॥३॥
महा सुन्य से उपर धाया, परम सुन्य परवेस किया ।
कहे त्रिलोकी नाथ सुनो भाइ साधो, द्वैत भाव सबदूर किया ॥४॥

भजन नं० १५

मे किस मुख करुं बखान, महिमा सतगुरु की (टेर)
सतगुरु देते मोती हीरे, मिलते हैं पर धीरे धीरे ।

किमत वड़ी महान महिमा ॥१॥

सतगुरु से सव संसय टूटे, मोह माया का फंदा छूटै।

हो गये रीषि महिान महमा० ॥२॥

सतगुरु लाखों डुवत तारे, दुर्जन चाहे बहे हजारे।

हो गया आत्म ज्ञान महीमा० ॥३॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, गुरु मिल्या रामा नन्दमाधो।

हर भज उतरो पार महिमा० ॥४॥

भजन नं० १६

मेरे डारे कर्म सव धोय म वारी जाउ सतगुरु की (टेर)

सतगुरु ऐसा चाहिएरे ज्यूँ सिकलीगर होय।

जन्म जन्म के मोर्चा रे छीन मे डारे धोय ॥१॥

सतगुरु ऐसा चाहिये रे, जो दीपक घर होयं।

आई पडोसन ले गई रे, दीवला से दीवला जोय ॥२॥

सतगुरु ऐसा चाहियेरे, जो धुवियां घर होय।

प्रेम शीला पर डारके रे, दिय पाप सब धोय ॥३॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निर्वाण।

जो या पद की नीन्दा करसी, ताको नरक निसान ॥४॥

भजन नं० १७

प्रेम गुरुजी मेरी रंग दो चुनरिया (टेर)

ऐसी तो रंग दो जाको रंग नहि जावे
धोबी धोबे चाहे सारी उमरिया ॥१॥

चाहे रंग दो चाहे मोल मंगा दो
प्रेम नगरिया मे खुली है बजरिया ॥२॥

जब रंग दो जब लेकर जाउँ
चाहे बीत जावे सारी उमरिया ॥३॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर
जन्म जन्म की लगीह लगनिया ॥४॥

भजन नं० १८

होय हुंसियार गुरुजीक सरन, मन सचा फिर डरना क्या
तन मन खेती धनिया सेती, रात दिवस फिर सोना क्या (टेर)

कांसी पीतल सोना बन गया, पला लग्या गुरु पारसका ।
चेतन के घर आसन लग्या, जाग जाग नर सोना क्या ॥१॥

नोसो नदी नवासी नाला, सात समुद्र जल उड़ा क्या ।
सुख मन होद भरी घट भीतर, नाडुल्या जल पीना क्या ॥२॥

चित चेतनका ख्याल रच्याह, पांचु पंडवा रच दीना ।
गुरु गम पासा हाथ लग्या है, जीती बाजी हार क्या ॥३॥
रटले रे मनुवां गुरुजीकी वाणी, जो देगा सो गुरु देगा ।
रामानन्दका भणे कबीरा, राम भजन में रम रहना ॥४॥

भजन नं० १८

मेरे सतगुरुकी अटरियां चढके मगन भई (टेर)
जब उन मुन मे वास लियो हैं, गुरु न सेन दई ।
आठ पहर गुरु मुर्ति निहारूँ, लागी नगन नई ॥१॥
गगन महल में प्रितम प्यारा, झपट के लिपट गई ।
सो सुख कहां लग बरणों पियको दिलकी तपत गई ॥२॥
कोटि भानु परकाश भयो है, उलटके अवनी भई ।
उठत छतीसों राग बिना स्वर, बाजत बिन नई ॥३॥
भीतर बाहर लखो परम पद, सूझत सर्व मई ।
अलखराम जिय लहर थिरानी, जीवन मुक्ति भई ॥४॥

भजन नं० २०

मेरे सतगुरुकी अटरिया, दिवला जगमग-जगमग होय (टेर)
उँची अटरिया चन्दन किवरिया, नैनन ही का जोर ।
आवेगें कोई संत जोहरी, कर्म कुटिल दे खोय ॥१॥

चाँद सूरज दो मार्ग करले, गगन महल रहो सोय।
गगन महल में नोबत बाजे, शब्द में सूरत समोय ।२।
गुरु के चरण रज अंजन दैले, तिमिर न लागे सोय।
अलख राम या गारी गावे, जिवन मुक्ति फल होय ।३।

भजन नं० २१

सत गुरु आवो हमरे देश, निहारूँ बाट खड़ी (टेर)
वाहि देश की बतियाँ रे, लावें सन्त सुजान।
उन संतन के चरण पखारूँ, तन मन करूँ कुरबान ।1।
वाहि देश की बतियाँ हमसे, सतगुरु आन कही।
आठ पहर के निरखत, हमरे नैन की नींद गई ।२।
भूलगई तन मन धन सारा, व्याकुल भया सरीर।
विरह पुकारें विरहनी रे, ढरकत नैनन नीर ।३।
धर्म दास के दाता सतगुरु, पल में कियो निहाल।
आवागवन की डोरी कट गई, मिटे भरम जंजाल ।४।

भजन नं० २२

हमरा सतगुरु विरला जाने
सुई के नाके सुमेर चलावे सो यह रुप बखाने (टेर)
कितो जाने दास कबीरा, कि हरिनाकस पूता।
कितो नामदे व और. नानक, की गोरख अवधुता ।1।

हमरे गुरुकी अद्भुत लीला, ना कछु खायना ना पीवे ।
ना वह सोवे ना वह जागे, ना वह मरे न जीवे ।२।
बिन तरुवर फल फूल लगावे, सो तों वाका चेला ।
छिन में रूप अनेक धरत हैं, छिन में रहे अकेला ।३।
विन दीपक उजियाला देखे, एड़ी समुद्र थहावे ।
चींटी के पग कुंजर बाँधे, जाके गुरु लखावे ।४।
विन पंखन उड़ि जाय अकासे विन पंखन उड़ि आवे ।
सोई शिष्य गुरुका प्यारा, सुखे नाव चलावे ।५।
विन पायन सब जग फीरि आवे, सो मेरा गुरु भाई ।
कहे मलुक ताकी बलिहारी, जिन यह जुगुत बताई ।६।

भजन नं० २३

जुग म धन्य गुरु धन्य राम जगत—
धन २ करता कइ जुग विता ।
हां रे मनुवां पल कोनी की डोरे छिदाम ।१।
धन धनियाको निरधन युंही भटक ।
हां रे मनुवां पलका न पाया विश्राम ।२।
सतगुरु आयां शब्द धन पाया ।
हां रे मनुवां अजर अमोलक नाम ।३।
रामनाथ संत शब्द धन पाया ।
हां रे मनुवां सिर पर समरथ श्याम ।४।

भजन नं० २४

सतगुरु दीन्ही सैन समझ की, उलट नैयन दरसाया है।
उलटी नैन सुरत जब जागी, सनमुख दरसन पाया है। (टेर)
कोन देश से आयो हंसला, कोन देस रम जावोगे।
कोन देस में सेज तुम्हारी, कहाँ जा आसन लावोगे।१।
पूर्व देस से आया हूँ जोगी, पश्चिम देस रम जाउँगा।
तरवीणी में सेज हमारी, आसन सीखर जा लाउँगा।२।
क्या तुम्हारा नाम है हंसा, कौन ज़ात कहलावोगे।
कोन से धुने पर तपस्या किनी, काहे में जय समाआगे।३।
ना कोई कहिये नाम हमारा, ना कोई जात कहलाउँ मैं।
धुन धुने पर तपसा किनी, आपे में आय समाउँ मैं।४।
दाता हरि सिंह सैन लखाई, अपने में आप दीखाया है।
सुरजा राम मरम का जोगी, जामन मरन छुटाया है।५।

भजन नं० २५

मेरे सत गुरु काट जंजीर जो बडा दुखी हुआ (टेर)
एक हाथ माया ने जकड़ा, एक हाथ भगवत ने पकड़ा।
नाचे अधम सरीर जी०।१।
कभी मन जाय ध्यान योगमें, कभी मन, जाय विषय भोगमें।
एक निशान दो तीर जी०।२।

जल थल दुनियाँ बहती धारा, गहरा पानी दूर किनारा।
सोच खड़ा राहगीर जी० ।३।
जब तूँ आया सब कुछ लाया, अब जावेगा विरह सताया।
ज्युं मछली बिनु नीर जी० ।४।
पढ़ २ पंडित जोर लगाया, नहिं भूत मन बस में आया।
लाख करो तदवीर जी० ।५।
लोग कहें तदवीर बड़ी है, पर आगे तकदीर खड़ी है।
हाथ लिये समसीर जी० ।६।
ऋषि मुनि साधु ब्रह्मचारी, भेद बिना सब फिरे अनारी।
कटे न कर्म जंजीर जी० ।७।
जिगुरा कहता कागज लेखी, सतगुरु बोले आँखों देखी।
जाहिरमें तसवीर जी० ।८।

भजन नं० २६

मेरा सारा दुख बिसर गई म तो सतगुरु सरन गईं (टेर)
और सखी सब दुवलीए, तूँ विरहिण क्यूँ लाल।
अविनासी की सेजपर ये, सोकर भई निहाल ।१।
अविनासी की सेज कारी कहो सखी अनुमान।
कहन सुननकी गम नहिं री देखे ही परिमाण ।२।
कोटिन दमके दामिनी री, कोटिन सुरज चाँद।
पारब्रह्मको तेजकारी कह न सके अनुमान ।३।

सतवती पीवर वसेरी, अन्दर पियको ध्यान।
कहत सुनत लाजां भरे रे, ऐसो आतम ज्ञान।४।
ब्याहि से कँवारी मिलेरे, पुछे रसके बैन।
ब्याहि से ब्याहि मिले रे, लखे सैंन से सैन।५।
हँसी नहिं मुसका गई रे, मिले टकाटक नैन।
मिरा कहे मे लख गई री, सखी सखी की सैन।६।

भजन नं० २७

ऐसी २ अलख निसानी म्हारा गुरुजी, विरला संत न जानी
सोकर फोड एक गंगा निकली तो चहुँ. दिशि पानी में पानी
पानी मे एक परबत देखा तो सागर लहर समानी।१।
तलकर कुवां सिखर गढ वाड़ी तो सहजही ढीकर ढारी।
गुरु शब्द झड वर्षन लागो तो, सींच रेयो मन माली।२।
सींचत २ उपजन लाग्या तो निपजन लाग्या हीरा।
हीरा मोती निपजन लाग्या तो परखगा परखन हारा।३।
जलकी मछलिया सिखर जाय ब्याही तो जाके लोयन नाहि
अख बिन पख बिन चरण चोंच बिन झूल रही जल माहीं।४।
गुरु मुख जोय गीगन घर रवना तो दर सगा सांचा साँई।
सरदा नाथ का य वचन रसीला तो कहता हूँ समझाई।५।

भजन नं० २८

मे नहि रहूँगी राम अटकी, एजी मेरी लगी श्याम से प्रीति (टे०)
सतगुरु मिलिया कीरपा किन्हीं, दीन्ही ज्ञानकी गुटकी।
रामनाम की प्रीत लगीजद वामेर हृदय जचगी ।१।
राज रीति को मैं नहिं जानूं, सब संका मेरी मिटगी।
ससुर जेठ की कांण न राखूं, पड घुंघट पर पटकी ।२।
गणों गुंठी मै नहिं परुँ मैं कबहूँ की नटगी।
गहना म तुलसी की माला, और चंदन की चुटकी ।३।
साधक संग प्रीति लगी जद, भव सागर संतरणी।
मीराक प्रभु गिरधर नागर, जन्म मरण से छुटगी ।४।

भजन नं० २९

थेतो पलक उघाडो दीना नाथ
मै हाजिर नाजिर कदकी खडी (टेर)
साहु थे दुस्मन होय बैठे, सबने लगूं कडी ॥
तुम बिन साहू कोइन मेरो, डीगी नाव मेरी समद अडी ।१।
दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा, सुकु खडो खडी।
वाण विरह का लग्या हिय मै, भूलून एक घडी ।२।
पथर की तो अहिल्या तारी, वनके बीच पडी।
कहाँ बोझ मीराम कहिये, सो उपर एक घडी ।३।

गुरु रैईदास मिला गुरु पुरा, धुर से कलम अडी।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर, जोत मे जोत मिली ।४

भजन नं० ३०

मना तूं राम सुमर ले रे मनवा हरी सुमरले रे।
आसी तेर काम नाम की बालद भरले रे (टेर) ॥
संत कहत हैं बात धर्म की, चितम धरले रे।
सफल कमाई करनी है तो माहि करले रे ।१।
खोटी २ करे कमाई कुछ तो डरले रे।
आगे ठाडो धर्म राय तेरी खुब खबरले रे ।२।
बाल पणा हंस खेल गमायो इबतो तरले रे।
काम क्रोध मद लोभ मोह पांचुंस टलले रे ।३।
भव सागर तो उंडा घडा, किनारे पडले रे।
राम नाम की नौका करले पार उतरले रे ।४।
शील संतोष और दया धर्मकी वाडतो करले रे।
कह कबीर सुनो भाई साधो जीवत मरले रे ।५।

भजन नं० ३१

हरि मिलन का मारग प्यारे, गुरु बिन हाथ न आवेगा।
चाहे जितनी करो चतुराई, रीता ही रह जावगा (टेर)
पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण, फिर २ जन्म गमावेगा।
गुरु कीरपा होवे गोविन्द, घर बैठे ही पावेगा ।१।

पोथी थोथी बिन गुरु गमके, पढ २ मगज खपावेगा ।
बोधक बांच मिली नहिं माया, सत गुरु भेद बतावेगा ।२।
गुरु बिन ज्ञान भानु बिनु उजियाला कबहुंन तिमिर नसा बेगा ।
सरस माधुरी मोज महल की, सतगुरु तत्व बतावेगा ।३।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, गोविन्द का गुण गावेगा ।
रामान्द मिला गुरु पुरा, राम नाम रस प्यावगा ।४।

भजन नं० ३२

आसा वडी र हर का नाम की, हर भज उतरोना पार ।
फेरों माला दीनानाथ की (टेर)
डोरी लागी र जाका डर मिटारे साधो डर मिटा ।
नाद रही गरणाय ।
सहजा ही सतगुरु भेटिया ओर न आव म्हार दाय ।१।
लागी लागी करतो फिरर करतो फिर ।
अन्दर लागी है नाय ।
अन्दर लागी सो जानिय तन में रहीयें समाय ।२।
भोंदु आग पद धरो रे साधो पग धरो,
सीर सामो न जाय ।
एसी प्रीत मनोहरी, चुग २ कंकड खाय ।३।
नुगरां पर पथर पडो रे पथर पडो,
वेडी लागी है नाय ।
सत अमरापुर मालव दोय जुग राला है नाय ।४।

जात वरण कुल खो दिया रे साधो खो दिया,
दिल डारा दागा जी धोय।
कहत कबीरो धर्मी दासन, आवागवन मिटाय ।५।

भजन नं० ३३

नातो नाम को जी ह्यासुं तनक न तोड़ी जाय नातो (टेर)
पाना ज्यों पीली पड़ी रे, लोग कहें पिंड़ रोग।
छाने लांघन मैं किया रे पिया मिलण के जोग ।१।
वावल वैद बुलाइयारे पकड़ दिखाई म्हारी बाँह।
मुरख वैद मरम नहिं जाने कसक कलेजे माँय ।२।
जा बैदा घर आपणर म्हारो नाम न लेय।
मैं तो दाझी विरह कीर तूँ क्यूँ दारु देय ।३।
मांस गले गल छीजीयारे करक रहा गल आय।
आंगलियांरी मुंदरीर म्हारे आवण लागि वाह ।४।
रह रह पापी पपीहडार पीव को नाम न लेय।
जै कोई विरहन साम्हलेरे पीव कारण जीव देय ।५।
काढ कलेजो मैं धरूँ रे कागा तूँ ले जाय।
जा देशां म्हारो पीव बसेरे वे देखे तूँ खाय ।६।
दरद की मारी वन-२ डोलुँ वैद मिला नहीं कोय।
मीरा की प्रभू पीर मिटगी जब वैद सांवलिया होय ।७।

भजन नं० ३४

मान कोनी दुनिया कमी की मारी, भूलो फिर सारो लोग ।टेर।
राम समझ चला सो हरिका वंदा, अगलोडी मजल करारी
अधर धार नैणा विच तकिया, लग रही सूरत हमारी ।१।
राम मोह माया म भरमो डोल, भगतीं लाग खारी ।
काया माया तेरे संग नहि जावे, रीतोहि जाय भिखारी ।२।
राम आग पिछ बांव दणं, फूल रही फुलवाड़ी ।
कली-२ म महक वासना, भंवर कर गूँजारी ।३।
रामनाथ गुलाव मिला गुरु पूरा, सफल भावना म्हारी ।
मानी नाथ सरण सत गुरु की, नजर चढ़ा गिरधारी ।३।

भजन नं० ३५

राम रस अमरा है भाई, कोउ साध संगत से पाई (टेर)
रे विन घोटे विन छाने पीवे, कोडी दाम न लाई ।
रंग रंगीले चढत रसीले, कबहुं उतरी ना जाई ।१।
रे छके छकाय पगे पगाये, झुमि-२ रस लाई ।
विमल-२ वानी गुन बोले, अनुभव अमल चलाई ।२।
रे जहाँ-२ जावे थिर नहिं आवे, खोल अमलले धाई ।
जल पथर पुजन करि मानत, फोकट गाढ बनाई ।३।
रे गुरु परताप कृपा ते पावे, घट भरि प्याल फिराई ।
कहे गुलाब मगन होय बैठे, भगिहे मोर बलाई ।४।

भजन नं० ३६

हरी रस ऐसा रे जाके पियते अमर होय जाय (टेर)
आगे-आगे धूँ जले रे पीछे हरियल होय ।।
बलिहारी या वृक्ष की जी जड काटे फल होय ।१।
हरि रस मंहगा मोल का जी पीवे बिरला कोय ।।
हरि रस को तो जो जन पीवे धड पर शीशन होय ।२।
भक्ति करो तो कुल नहिं जो, कुल बिन भक्ति न होय ।।
दो घोडें के उपर हमने चढा न देखा कोय ।३।
भक्ति करो और कुल रहो जी, अड़ें रहो दरवार ।।
दो घोडें की कौन चलावे चारो पर हो असवार ।४।
हरि रस पीयो नाम देवजी, पीपा और रइदास ।।
दास कबीरा न ऐसो पीयो, फिर पीवण को आस ।५।

भजन नं० ३७

जीन्हो ने मन मार लिया, मै तो उन भलो का हूँ दास (टेर)
जी आपा मार जगत मे बैठे, नहीं किसी से काम ।
उनमें तो कछु अन्तर नाहिं, सांत कहो जी चाहे राम ।१।
जी मन मार तन वस किया जी, सभी भरम भये दूर ।
बाहर तो कछु सुजनाहिं, अन्दर झलक है नूर ।२।
प्याला पिलिया नाम का जी, छोड जगत का मोह ।
हमको सतगुरु ऐसे मिल गये, सहज मुकति गई होय ।३।

नरसी जी के सतगुरु स्वामी, दियो अमीरस प्याय ।
एक बुंद सागर मै पड गई, काह करे गो यमराय ।४।

भजन नं० ३८

मंदर म कांई ढुंढती फिर म्हारी सुरता, घट म वस है भगवान
मुरत तो मंदर में मेली, वा मुख से नहिं बोले ।
करनी पार उतरनी वंदे वीरथा जन्म क्यूं खोले ।१।
गउ के मुखते गंगा निकली पांचो कपडा धोले ।
बिनु साबुन तेरा मैल कटेगा हरभज हलका होतो ।२।
तन कर कुंडि मनकर साबुन, याहिम शील समोले ।
सुरत ज्ञान का करते मोगरा, दिलका दाग धोले ।३।
शील सत्य की नौका चढकर, हरके दरसन जो ले ।
कह कबीर सुनो भाई साधो, परवत राई ओले ।४।

भजन नं० ३९

भगती का बागलगाले मेवा निपज वेसुंमार (टेर)
यं काया पर जमी जमाले, मन सुरता का बैल जुटाले ।
राम नाम का बीज गिराले, घट में हो जायगी झनकार ।१।
यं काया पर रखले माली, सींचे बाग होवे हरीयाली ।
काम क्रोध की काटो डाली, उसने देवो जलाय ।२।

दया धर्म का रखले चाकर, वाग तेरे की करसी खातर ।
शील संतोष की करले पालकी, कर बागन की सैर ।३।
ससी सिंह वणीक माहिं, गुरुबिन कोई जगावे नाहिं ।
उसी सेर से कर लों प्रीति, तोड बाड लंघ जाय ।४।
सुखीराम श्यामा कुंध्यावे, ऐसा भगत कोई बाग लगावे ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जम की मार वचाय ।५।

भजन नं० ४०

राइका वीरा रे टोरडीन धीमी-धीमी हांको ।
सलानी भंवरारे टोरडीन मदरी मदरी हांको (टेर)
जी सूरत सांड सागर म घुस गई कयो न मान थांको ।
रे ज्ञान ओठिडान लार चढालो, पकड नुराम नाखो ।१।
जी सुरत सांडन वस कर राखो, नाथ विंधादो वांको ।
रे नाम को न केल घलादो जद भय मान थांको ।२।
जी क्षमा क्ष वटा गमका गदिया प्रेम पलाण सजालो ।
रे धरम को थे घालो सोडियो जद देखो रम झांको ।३।
जी चीतकर पांवर मनकर चढजा, मुकती का मारग हांको।
रे पांच कोसक आग टपना सिधो पडो सरनाटो ।४।

भजन नं० ४१

चलना है कोस पचास बेटा राई का टोरडीन ।

ताव तीसी हांको क्युंना रे ललकारो क्युंना रे (टेर)
टोर डीक गल गल घुघरा मोरि सइयों ये।
तो मोतियों से जड़ी है लिलाड वेटा राई० ।१।
चांद सुरज दोय पांवडा मोरी सइयों ये।
तो रतना से जडा है पिलाण वेटा राइ० ।२।
टोरडीया हरको पडचां पाँव धरो मोरि सइयों ये।
तोलर चालो राइको वेटा राइका ।३।
राम र लक्षमण सोरहा मोरि सइयों से।
तो सीता ढोल बाल वेटा राइका ।४।
राइका न तलमा तलमा चुरमो मोरी सइयों से।
तो टोरडीन निरी नागवेल वेटा राईका ।५।

भजन नं० ४२

वटा उ वीरा वाट घणी दिन थोडो रे (टेर)
घर रह्यो दूर सूरज छीपण चाल्यो।
दोड सक तो दोड रे ब० ।१।
होय हुंसीयार हीमत कांई हारो।
तो हांक घणेरो घोडोरे ।२।
निर्भय होय नगर जाय पूचों।
विन पूंच्या पडसी फोडोरे ।३।
नागा स्वामी की या है रीति।
पर मतो चेतो मोडो रे ।४।

भजन नं० ४३

जाग पियारी अब क्या सोवे रैन गई दिन काहे कूं खोवे (टेर)

जिन जागा लिन मानिक माया।
मैं वोरी सबसोय गमाया।१।

पिय तेरे चतुर तूँ मूर्ख नारी
कबहुं न पिय की सेज सम्हारी।२।

तैं वोरी वोरा पन किन्हों
भर जोवन पियो अपनोन चिह्नो।३।

जाग देख पिय सेज न तेरे
तोहि छाडि उठ गये सबेरे।४।

कहत कबीर सोई धुनि जागे
शब्द वान उर अन्तर लागे।५।

भजन नं० ४४

पिया मेरा जागा मैं कैसे सोईरी (टेर)

पांच सखी मेर संग की सहेली।
उन रंग रंगी पिया संगन मिली री।१।

सास जीठानी ननद द्योरानीं।
उन डर डरी पिय सार न जोई री।२।

द्वादश ऊपर सेज बिछानी।
चढ न सकी मारी लाज लजानी री ।३।
रात दिवस मोहि कुका मारी।
मैंन सुनी रचरही सँग जार री ।४।
कहत कबीर सुनो सखी सानी।
बिन सत गुरु पिय मिलन मिलानी री ।५।

भजन नं० ४५

मत्त गगन भया जब क्या गावे (टेर)
य गुन इन्द्रि दमन करेगा, वस्तु अमोली सो पावे।
तिरलोकी की इच्छा छाडे, जगमे विचरे निदावे ।१।
उल्टो सुल्टो निरति निरंतर, बाहर से भीतर लावे।
अधर सिंहासन अविचल आसन जहवाँ सूरति ठहरावे ।२।
त्रिकुटि महल मे सेज विधी है, द्वादस अंदर छिप जावे।।
अजर अमर निज मूरत सूरत, ओहं सोहं दम ध्यावे ।३।
सकल मनोरथ पूरण साहिब, वहुरी नहिं भो जल आवे।
गरीबदास सत पुरुष विहेही, सांचा सतगुरु दरसावे ।४।

भजन नं० ४६

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले (टेर)
हीरा पायो गांठ गंठायो, वार-वार वांको क्युं खोले।
हलकी थी तब चढी तराजू, पूरी भई फिर क्यों तोले ।१।

सुरत कलाली भइ मतवाली, मदवा पीगइ विन तोले ।
हंसा पाया मानसरोवर, ताल तलईया क्यूं डोले ।२।
तेरा साहिव है घट भीतर, वाहर नैना क्यों खोले ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिल गया तिल मोल ।३

भजन नं० ४७

मन मस्ताना रे भटक २ मर जायेगा । (टेर)
जल बिन विरगी मरे तिसायो, इत उत भागो भागो ।
पिछलो जन्म तूँ वृथा ही खोयो, रतन हाथ नहीं लागो ।१।
पढ गयो वेद कर जो कर २ रह गयो कागो २ ।
दाडूँ दाख हेत कर खा गयो, विष्ठाको नहिं त्यागो ।२।
सचो सोनो नहिं गलत है, संग में जले सुहांगो ।
प्रहलाद भगततो क्युँ नहीं जल गयो, करो सत्य की सागो ।३।
सई सांझ तूँ पडकर सो गयो, भोर भई जब जागो ।
सत गुर टेर सत्य की दीन्ही, उठत क्युँ नहिं आगो ।४।

भजन नं० ४८

मन मेरा मतवाला हाथी रे मन०
अमर पटा मेर सतगुरु लीख दिया, लागी री सांची (टेर)
विरह की आग लगी मेरे घट में अनुभव की बाकी ।
सूरत कलाली प्याला फेरत, पीवो सेन सांची ।१।

पीवत प्याला देर न लागी भवकतार जागी।
पी प्याला भारत म विचरी, छोड़ी ना वाकी।२।
सुरत निरत की लगी न सीनी चढ़ा वंक घाटी।
गुरु जान का गोला घमका, काल फोज नाटी।३।
धन सुखी राम गुरु पुरा मिलिया सैन दई सांची।
इशर नसा मेर कदेन उतरें, चढ़ा रहे दिन राती।४।

भजन नं० ४८

मन परदेसी हो यह नहिं अपना देस। (टेर)
सत का कहना सत में रहना, आनंद रुप किसी का भयना।
जो कोई कहे सभी की सना, यहि रटन हमेस।१।
गुरु का वचन सत्य कर मानो; जगत जाल झुठा करं जानो।
तत्व मसिका रुप पिछानो, कट जाय करम कलेस।२।
जो दीखे सो रुप हमारा, कोई नहीं है हमसे न्यारा।
मित्र और शत्रु कोई नहि हमारा, मिट गये राग र द्वंस।३।
साह गुरु शुकदेव विरजे, चरण दास चरणों में साजे।
गुरु के वचन कभी नहि त्यागी, यहि सत्य उपदेस।४।

भजन नं० ५०

उड़ जारी नींद भँवर सलानी।
थोड़ा सा जीना की खातर कांई सोव (टेर)

सुख मन होद भरी घट भीतर।
नाडुल्याम कपड़ा हेली कांई धोवे ।१।
सोहन सुरज उग्या घट भीतर
वाटडल्या में दिवला हैली कांई जोव ।२
मीति डारी खान खुदी घट भीतर।
करह कांकरांन कांई टोल ।३।
कहत कमाली कबीरजी की वाली।
मोति डारी माला कबीरो पोले ।४।

भजन नं० ५१

सखी मेरी नींद नसानी ये।
पियको पंथ निहारत सिगरी रैन विहानीये (टेर)
सखियन मिलकर सीख दई मन एक न मानी ये।
विन देखा कल नहिं पडत जिय ऐसी ठानीये ।१।
अंग अंग व्याकुल भई मुख पिय पिय वानीये
अंतर वेदना विरह की कोई पीर न जानीये ।२।
ज्यों चातक घन को रटे मछली जिमी पानी।
मिराके प्रभू गिरधर नागर सुध बुध बिसरानीये ।३।

भजन नं० ५२

सोव है नगरिया सारी जागुंरी अकेली में (टेर)
चेतन की चिराग चासी, चांदनी हवेली मे।

वागडम अंधेरो छायो डरुहूं अकेली मै ।१।
दशुं टाटी बंद करके सोचथी अकेली मै ।
पिया पिया टेरन लागी, नारथी नवहेली मै ।२।
ॐ मोहम होने लागी, अवांज भइ हवेली मे ।
श्याम सुन्दर मन्दिर अन्दर,पिया मिला दुहवेलीमे ।३।
अन्य सीखर पर सेज पियाकी बांह पंकड लेलीनी मे ।
टीका राम परम पद गावे, पियसंग चोसर खेलीमे ।४।

भजन नं० ५३

तैं मेरी नींद उडाइरे चरखला उडाइरे च० गमाइरे (टेर)
भावभगति कीम रुइतो मँगाई, सुरता पिनावण आईरे च० ।
प्रेम पिंजारो पिनन लागो, नामतांत धुन वाईरे चर० ।१।
उची-उची मैडींकी नीचीं-नीची-पैडी, जहाँ वैठी कतवारी रे ।
कात पींद कर हुइरे पुरानी, राम नाम धुन लागी रे च०।२।
ज्ञान गुवाडीम चरखो वीघालो, पांच पचिसों कातन आइरे च.
नान्हासा काता मतो घुंडी नहिं राखी, ज्ञान कुकडी उतरीरेच० ३
रामानन्द मिला गुरु पुरा, चरखा की सैन समझाईरे चर० ।
दास कवीराका भलाही चरखला, ज्योति मेंज्योति मिलाइरेच०।४

भजन नं० ५४

भज मन राम राम राम चरखो चाल वडो निधान (टेर)
चरखोतो मेर घरसलाई, चरमख लाई न्यारी ।

पांच पांखडी फिखा लागी, भंवर माल लिपटाई।१।
सत संगत पा रुइ मंगाई, सुरत पिनावण चाली।
मनते लियो पिनन लागो झिनक तांत झिनकाई।२।
ऊँची मैडी लाल किंवाडी, जहां वैठी तकवारी।
राम नाम का सुत कतालो, कात हरकी प्यारी।३।
नानु कातूँ जनम सुधारुँ मोटो सूत बिगाड़ूँ।
साध संत की संगत सेती, विरह कुकडी तारुँ।४।

भजन नं० ५५

चरखा हालन लाग्या सारा रे तन किसी खरात उतारा (टेर)
कारीगर जहीं घडन वैठा माँय घोर अंधियारा रे।
विन उजाल साल सव कीना वहाँ ही वैंठ सुधारा रे।१।
कारीगर जहाँ धडवा वैठा, माय घोर अंधियारा रे।
वहतर छेद कोठरी जिसम, बीच बना गलियारा रे।२।
गढा मंढा तइयार हुआ जद धरती वीच उतारा रे।
चरखे वाली के मन भाया, सबको लगे पियारा रे।३।
अंत समय चरखा की आई, खिडगया न्यारा २ रे।
कहत कवीर सुनो भाई साधो, लाद चला विणजारारे।४।

भजन नं० ५६

भोंदुरा मारो नहिर खलकारो वाडीम केसर वोई (टेर)

रे पिछले जनम की करनी आच्छी मानुस देह तन पाई ।
लख चोरासी फिरो भरमतो, कोनी भजो रे एकतारो ।१।
र तेरी वाडीम चोर लाग गया, तेर नजर नहीं आया ।
शन २ सारो फल खायो ओर वाँध लिभारो ।२।
रे शील संतोस की वाड दिवाकर, सत का फाटक लाले ।
राम नाम को घुमारे गोफियो, गोलो प्रेम चलाले ।३।
र काम क्रोधको अखो रोप्यो, तूँ जान मेरो प्यारो ।
कहत कवीर सुनो भाई साधो, पर सो गयो रखवारो ।४।

भजन नं० ५७

हीरा झलक द्वार पर, निरख कोई सुराजी एजी० (टेर)
सिध आसन विछाय कर, बैठा घर धिराजी एजीये बै० ।
उनका ही ध्यान लगाय कर, पुँचा तै तीरा जी ।१।
गंग जमुन क बीचम वहे जल नीराजी एजीये वहे जलनीरा ।
पूरव से पछीम चला वडा मतिका धीराजी ।२।
बाजी विरहन वंसरी सुनो हरीका पुराजी एजीये ।
हर हीरा जिन लख लिया घट ही में नूराजी ।३।
दास कबीर हीरा लखा पाया पद पूराजी एजीये ।
रामानन्द का डीकरा शवदां का सुराजी ।४।

भजन नं० ५८

विणज कैसे कियो रं लालांके लोग विहारी (टेर)

रे वोदी गुण पुराणी वालद, माल घला घण भारी।
तेरी गुण का टांका टुटा फिर भी नहिं संभारी ।१।
र जठे नगरी चोर ठगाकी वठे वालद ढाली।
चार चोर तन लुटण लागा लुट गयो माल हजारी ।२।
रे किसीन भर लई लोंग इलायची, किसीने सामर खारी।
भाई संताने एसी भरलई, करी चोरासी न्यारी ।३।
रे कहत कबीर सुनो भाई साधो करो चलन की तारी।
इक दिन सबको चलना होगा हुकम हुआ सरकारी ।४।

भजन नं० ५८

साधो देखा थारा देस दिखण में है।
यह रणोंकार की धुन में है (टेर)
नाभ कमल में साधो नाव चलत है।
तो वंकनाल वरसण म है।
सूरत सवद घर साधो ताली लागी।
तो अकल कला अपने में है ।१।
सूरत नीरत मिल चढीर सीखर पर,
तो आगम भोम नीरखणन है।
अनहद नाद वांसुरी वाजी,
तो झीणी २ टेर सुणन्न म है ।२।
सोंहूनी सीखर घर आप विराजे,

तो नाहीं जनम मरण मे है ।
झील मिल २ जोत जगत है
तो सोहं शब्द श्रवण मे है ।३।
त्रिगुण ताप तीमिर नहीं व्याप
तो रहता मगन लगन मे है ।४।

भजन नं० ६०

घायल ना जीवेजी जाँके लागा सवद डांरां सेल हो० (टेर)
लागी २ सवी कहेरे, लागी नाहिं खेल।
लागी जबही जानीयरे घाव न आवे मेल हो० ।१।
लागी उनक जानियेरे राज तजे अव वेल।
अन्दर दीवा चसर हारे छाला परेम का तेल हो० ।२।
पढना लिखना हे नहिंरे, सत संगत का खेल।
चार वेद घट म वसरे, सांचे गुरु जी संमेल हो० ।३।
सत संगत सार अनेक हरे काटे यम की वेल।
कहत कबीर सुनो भाई साधो झुठा जगत का खेल हो ।४।

भजन नं० ६१

साधो रे भाई जीवतां जुगती सोई मुक्ति। (टेर)
मरा पीछ मुक्ति का कुण सुख देखा तो झुठी ही दुनिया बकती
लोचन ज्ञान लगा घट भीतर, जागी है जोत भभकती।
रवी उगो रजनी नहीं माव, तो डरमत जाय अवरथी ।१।

ज्ञान तेग घुटी म्यान नमाव तो फटकारी धकधकती ।
भरम मोरचा पर ऐसी मारी तो रतीयन छोडी लगती ।२।
व्यभीचारण पियो कदेयन चावती दिल वीच गाँठ कपटकी ।
पतिभरता नार पियाजी की दासी तो देख वदन छीकरती ।३।
नेड २ निकट वसत अविनासी तो देख्या कह नहीं सकती ।
धर दूरवीन दिदार निरखलो तो, गुरु मिला है समरथी ।४।
पाप पुन्य दोनु पूंचगा नाहि तो, करणी जायन कसती ।
कहत विहारी जोगी देस विराना तो मोज लगी मन मस्ती ।५।

भजन नं० ६२

वदन पर लाग रही मेरे गुरु चरणों धूल वदन पर० (टेर)
जबसे धूर लगी मस्तक पर मेरी दुवीदा हो गई दूर ।१।
इंगला पिंगला ध्यान धरत हैं, सूरता पुंचीह वडी दूर ।२।
आसन साद दृष्टिकी घाटी निकलगा विरला सूर ।३।
प्रेम भगतगुरु रामानन्द मिलिया, करीह कवीर भरपूर ।४।

भजन नं० ६३

विणजारिण सोव मत जाग, टांडा तेरा लद जायगा ।
ये उठ विरहिणी सूरत संभार बटाउ डालद जायगा (टेर)
ये राम नाम की बालद भरले भरले गुण हिलाय ।
वालद तेरी लाखकी ये कितनोक नफोरह जाय ।१।
ये टांडा तेरा लद गया ये तूं विरहण गई सोय ।
जब जागी जद एकलीए, नैन गमाया दोनु रोय ।२।

चंदन की चोकी वनीं रे विचम जड़दइ लाल।
हीराकी घुंडी लगीरे पच पच मराये सूनार।३।
सिर माटी को तुमडो ये सची करक जान।
सिरक साट हरी मिलये तोभी सस्ता जान।४।
लाखो सिर तूं दे चुकी ये यमराज की भेट।
एक शीश तूं ना दियो ये सतगुरुवांकी भेट।५।
कबीर का घर सामने ऐ गलकटे के पास।
करणी हाथों हाथ की जी तूँ क्यूँ भया उदास।६।

भजन नं० ६४

भगति मरजी होय तो कीजो

जै थारो मनुवों नहिं ठिकान दोस गुरांन मत दीजो (टेर)
राम पली अपन मनको रोको पिछ परो दीजो।
संतगुरु साहिव है मुकतीका जाको सरणो लीजो।१।
राम जो थारी इच्छा होय तिरणकी तुरत तारी कर लीजो।
कर अरदास गुरांजीक आस हीमत हार मत दीजो।२।
राम कपट कठोर झुंठ और निंदा ये पली न जदीजो।
तन मन धन तीनोय अपना, भेंट गुराजी न दीजो।३।
राम इंगला पिंगलारवो जुगत सुँ सुखमन का घर लीजो।
मान सरोवर मोती उपज व मोती चुगलीजो।४।

राम अगड वंमका दुकानगाडा जीव सिंह कर लीजो ।
कह सुखी राम गुरांजीक सरण जीवत मुकती लीजो ।५।

भजन नं० ६५

परम प्रभू अपने उर पायो ।
जुगन-जुगन की मिटी कल्पना सतगुरु भेद वतायो (टेर)
जैसे कुंवरी कंठमणि भूषण जान्यो कहां गमायो ।
काहु सखी न आय वतायो मनको भरम नशायो ।१।
ज्यों तिरीया स्वपने सुत खोयो जानके जी अकुलायो ।
जाग पड़ी पलगां पर पायो, ना कहा गयो नहिं आयो ।२।
मिरगा पास वस क़स्तुरी ढुंढ़त वन-वन धायो ।
उलट सुगंध नाभिकी लीन्ही, थिर होयक सकुचायो ।३।
कहे कबीर भई है वह गति ज्यों गुंगे गुड़ खायो ।
ताका स्वाद कहो कहे कैसे मनही मन मुसकायो ।४।

भजन नं० ६६

मेरो हीरो हरा दीयो कचराम (टेर)
पांच पचीसका झगडाभये हेली मोह मायाका रगडाम
पूर्व बताव कोई पछीम वताव ।
कोई वताव पानी पतराम ।१।
मंदरं बताव कोई मजिद म बताव ।
कोई बताव माला जपने म ।२।

छोरो ढूंढ़न मे गईय आली।
उलझपड़ी उस झगड़ा ।३।
वेद व्यासजी न हीरो पायो
ले धरियो ये हेली वेदाम ।४।
दास कबीरा न हीरो पायो।
ले धरियो ए हेली अंचलाम ।५।

भजन नं० ६७

संतो सार शब्द रंग झीना साधो सार० (टेर)
उठे घाट जहां उपजैं, नहि रवावन वीना।
उल्टघाट टक्सार मची है, लखि पंडत परवीना ।१।
उठी पपील विहंगम मारग, सार सुरत गहि लीना।
चौदा तक्क अकाके आगे, वैठे पुरुष परबीना ।२।
गवरजे गगन मगन भय साधु, परखे तत्व परबीना।
योगी योग युगति तप कीना, पायो शब्द नगीना ।३।
भानीनाथ सरण सतगुरुकी, पायो पद निर्विना।
कहे कबीर सुनो भई साधो, विरले संतन चीन्हा ।४।

भजन नं० ६८

उवा जती गोरखनाथजी पुकारे
मूल मत हारो मेरा भाई रे (टेर)

ग्यारवी सुनीरे अवधु वारस वी सुनी,
सुना तेरा घट पींड सारा ।
पढियातो पंडत अवधु गुण विना आना,
अना तेरा मोक्ष द्वारा मेरा भाइरे ।१।

कुणसा कमलभरे अवधु सांसम सांसा,
कुणसाम जीव का वासा ।
नाभकमल म अवधु सांस म सांसा,
हिर्दय मे जीवका वासा मेरा भाइरे ।२।

कुणसी तो कहियेरे अवधु जोगण भोगण,
कुणसी साधा घर बासा
टूडा तो पिंगलारे अवधु जोगण भोगण,
सुखमन साधा घर बासा मेरा भाइ रे ।३।

बैठत बारारे अवधु चलत अठारा,
सोवत जाय बतीसा ।
मथन करंता अवधु चोंसठ टूटैरे,
कदसी भजलो जगदीशा मेरा भाई रे ।४।

संज्याम सुवणार अवधु मध्याम जागणा,
त्रिकाली म देना पहरा ।
यां तीनामर अवधु चुक पडगी तो
लगजा काल का घेरा मेरा भाइरे ।५।

टके भर खाना रे अवधु बायें अंगलेटना,
त्रिकुटि का करलो सहारा।
छरण मंछंदर जती गोरख बोला
टल जायगा चोरसी का फेरा मेरा भाइरे।६।

भजन नं० ६९

भजले रामनरे साधो नजर चढा गोविन्दा (टेर)
रामउंचो कुवोनीची मालन, विननेज जल काढ।
सींचे वाग फूल कुमलावे, जड काटे फल लागे।१।
राम वर्षे हीरा निपजे मोती, हंस हीर नहिं चुगता।
चोडे लाल पडी आंगन म, सुझ नहिं जग अंधा।२।
राम ज्ञान गरीबी ज्ञान फकीरी, द्वंद वाद नहिं करना।
य संसार वाडका कांटा, सोच समझ पग धरना।३।
रामनाथ गुलाब मिलागुरु पूरा, कटा पापका फंदा।
भानी नाथ गुरांक सरण, रुप्या भजन का झंडा।४।

भजन नं० ७०

कैसे लागूं पिया जीन प्यारिया (टेर)
भीतर कुरडी रामा बाहर चोको, देणन पाउंय बुहारिया. १
वीसोन चाउंराम पोयोन चाऊं, जीमोती चाउं बुरामातियां२
क़ातोन चाउं रामा टेरोन चाउं ओडोतो चाउं चंदा साड़ियां३
कहत कमाली क़बीराकी वाली, व्याहिस भलीये कंवारियां.४

भजन नं० ७१

साधो ऐसा देस हमारा संतो ऐसा देस हमारा (टेर)
बिन बादल जहाँ बिजली चमके, बिना सूर्य उजियाला।
बिन नयनन जहँ मोती पोवे, बिन स्वर शब्द पूकारा ।१।
इस काया मे रंग बहुत है, भोहे रवी शशी तारा।
सहस कमल द्वादसक आग, जहाँ रहे धनी हमारा ।२।
जलकी बूँद गिरं जल हीमे, नहि मीठा नहिं खारा।
लोक लाज कुल किरिया नाहि, नाव हां नेम अचारा ।३।
वेद किताब की वहाँ गम नहिं, बाघट अगम अपारा
बिन बाजा जहं वाजा बाजे, मूरली बिना सितारा ।४।
अपना जाय ब्रह्म होय बैठे, कहन सुनन से न्यारा।
सतगुरु कहे सुनो भाई साधो, पहुंचे गुरु का प्यारा ।५।

भजन नं० ७२

रंग लागत २ लागगो ये भ्रम भागत २ भागगो (टेर)
पली सीख मेर सत गुरु दीनी, दूजी म रामपती जगो ।१।
गुरुजी की सीखले सोमत जाना, सूयां सतगुरु लाजगो ।२।
घणा दिना को सोयो म्हारो हंसलो, बिन कीरपा नहिं जागगो ।३।
मीरां बाई क ऐसो रंग लागो, ज्युँ गुदड़ी बीच तागेको ।४।
कहत कबीर सूनो, भाई साधो, गुरु क चरण चीत लागगो ।५।

भजन नं० ७३

रे मन ऐसो आवे नैया मे नदिया बहि जाय (टेर)
एक अचंभो मैं सुनो जी, खरमे लागी लाया।
पानी कादा सभी जलाजी, मछलीक आयो नहिताव ।१।
एक अचंभो म सुनोजी, मछली चाव पान।
बगुला बजाव ढोलकीजी मिडक तोडतान ।२।
एक अचंभो म सुनोजी, सिंह चरावे गाय।
विली विलोव विलोवनो जी मुसा बेचन जायं ।३।
एक अचंभो म सुनोजी, कीरी पींवर जाय।
हाथी लीनो हाथ मवा, उंट लियो लटकाय ।४।
एक अचंभो म सुनोजी, मुरदा रोटी खाय।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो व तो अमर हो जाय ।५।

भजन नं० ७४

कहां गयो मिजाजण घरवालो ये कित गयो०
घरवालो ये तेरो रखवालो (टेर)
सुना खेत मिरगला चुग जांय, कहां गयोय डोढी वालो ।१।
पांच मीरगा पचीस मिरगली, खांय खेत करदे खालोये ।२।
सत संगत की वाड लगाले, राम नाम रख रखवालो ये ।३।
कहत कमाली कबीरजी की वाली, पकड वठा खेती वालोये।४।

भजन नं० ७५

वरसन लाग्यो रंग शब्द झड लाग्यो री (टेर)
समरथ नाम भजन जब लागी, जनम मरण की चिंता भागी।
मेरे सतगुरु देगय सैन, सत्य घर पाग्योरी ।१।
चढी सुरत पछीम दरवाजा, त्रिपुटी महल पूरुष एक राजा।
अनहद की झनकार बजे जहं बाजारी ।२।
अपने पियासंग जाकर सोई, संसय शोक रहा नहिं कोई।
कट गये करम कलेस, भरम भय भाग्योरी ।३।
शब्द विहंगम चाल हमारी, कहे कबीर गुरु दीन्ही तारी।
रीमझीम २ रही होय, काल बस आग्योरी ।४।

भजन नं० ७६

सूरत मेरी रामसे लगी तंतो समझ सुहागन सूरतानार।
काहे कं माया जाल में फंसी (टेर)
लगनी लंगा पहर पहर सूहागिन, बिती जाय बहार।
धन जोवनह पावणारी, आव ना दूजी बार ।१।
राम नामको चुडलो परो, निर्गुंन सूरमो सार।
नख वेसर हरी नामकीये, पहर चलना परल पार ।२।
ऐसे वरको क्या वरुंये जनम ओर मर जाय।
वर परणो श्री सांवरोये चुडलो अमर होय जाय ।३।

सूरत चली जहं म चली ये, निराकार झंकार।
अवीनासी की पोल परे ये मीराँ करत पुकार ।४।

भजन नं० ७७

मगन होय मीरा चली तन कोइ न वरजन हार मगन (टेर)
लोक लाज कुलकी मरयादा, सीरसे तार धरी ।
मान अपमान दोए घर पटके, निकसीह जान गली ।१।
उंची अटारी लाल क्किवारी, निर्गुंन सेज वीहरी ।
पंचरंगी झालर सोहेये, सोभा अधिक बनी ।२।
बाजुबंद कडुल साजे, मांग सिंदूर भरी ।
सोहन थाल आरती साजे, सोभा अधिक भली ।३।
बार २ मीरा गावे धन २ प्रभू आज घडी ।
थे जावो राणाजी घर आपण जी, थारी तो म्हारी नाय वणी।४।

भजन नं० ७८

एक घडी एक गुरुजी राखो टेक

म्हारा हरीजन हालोना गुरु ज्ञानम ।१।
दोय घडी दोय गुरुका चरण धोय म्हारा० ।२।
तीन घडी तीन गंगम जमुना लीन म्हारा० ।३।
चार घडी चार नावो काशी केदार म्हारा० ।४।
पांच घडी पांच गुरां स बोलो सांच म्हारा० ।५।

छ घडी छ गुरां की बोलो जय म्हारा० ।६।
सात घडी सात मायाक मारो लात म्हारा० ।७।
आठ घडी आठ माखनियो रोडो घाट म्हारा० ।८।
नो घडी नो गुरां की लंबी सोय म्हारा० ।९।
एक वींदी दस गुरांन दीज्यो जस म्हारा० ।१०।
एकादशी करियो गुरुका ध्यान धरियो म्हारा० ।११।
वारस पलना कीन्हा गुरुजी दरसन दीन्हा म्हारा० ।१२।
तेरस तेर तनम गुरुजी मेर मनम म्हारा० ।१३।
चोदस तुल साखाडी, गुरुजी पोल उघाडी म्हारा० ।१४।
पूरण चंदा जोयाम्हे सारापाप श्रोया म्हारा० ।१५।

भजन नं० ७८

साधो भाई मुकतीका मार्ग झीणा, जाण कोई संत प्रविणा (टे०
तीरथ करना भटकत मरना, तो वेद पढ़े सोई वकना।
मनकु मार तनकुं तापणा, तो मुख वचना चुप रहणा।१।
मनके मते मत चलनारे चेला, कहना गुरुजी का करना।
उल्टे नैण ब्रह्म ओलखलो, तो उन मुन धुन मैं रहना।२।
मुकतीका मारग मे जो बताउ, तो भेख तणा लेणा सरणा।
त्रीकुटी सूरत को सुमेरु ठरालो, तो सोहं जाप सिमरणा।३।
इमरती नाथजी मिल्यागुरु पूरा, तो दीन्हा ज्ञान प्रवीणा।
मघा मुकती इणविधहोसी, तो रंजी जैसा वण रहणा।४।

भजन नं० ८०

मेरा राम सनेहि जोगी बांवरिया, मेरी नगरी म पूँचो आय स(टे.)
चार कूँट की रमत करता, धरती धरे न पाँव।
तीन लोक झोली म राख, राइ म रयो ये समाय।१।
आवो सखीं याहि देखले, जाको रूप लखो ना जायं।
पोंडो चाहे परतीतन छोडू, मेर हिरदन रयो ये समाय।२।
वरजी काहूकी नारहूं बिन देख्या रहो न जाय।
अचरज रूप धरा अविनासी, श्रीनाथ गुलाब लुभाय।३।

भजन नं० ८१

गली तो चारों बंद पडी म्हारो पियते मिलन कैसे होयग०
उँची नीची राहलपटीली, पाव नहीं ठहराय।
सोच सोच पग धरुं जतन से बार-बार डिग जाय।१।
उँचा नीचा महल पिया का मोते चढो न जाय।
पिया दूर पंथ मारो झिनु, सुरत झिकोला खाय।२।
कोस २ पर पहरा बैठा, पैड २ वटमार।
हे विधना कैसी रच दीनी, दूर बसायो म्हारो गांव।३।
मिरा के प्रभू गिरधर नागर, सतगुरु दइ बताय।
जुगन २ बिछडी मीरा, घर मही दिया मिलाय।४।

भजन नं० ८२

पंडत बीरा क्याका थे ज्ञान सुणाया

गुरुजी पढा मेरा तीसरी पाटी, अण भण भेद बताया.(टेर)
ब्रह्मान मारा शिव संहारा, तो विष्णु न मार भगाया।
चार वेद का करारे पथरणा, तो उपर बाग लगाया।१।
कन्या पचीस गुरुजीक खेल, तो पांचु पुत्र पढाया।
आदि शकतिसे करा घरवासा, तो श्री जीन सुरज पुजाया।
कथा पुराण भागवत गीता, तो कायाक बीच पढाया।२।
ईतना है राई की रंगम तो वेदन कंठ ठराया।३।
छुछम वेद वेदांम सन्यारा, तो छुछम भेद बताया।
छरण वछदर जती गोरख बोल्या, तो माता पूर्वलासे पाया।४।

भजन नं० ८३

हेयार हालो मालिक थारी नगरीमें बसै परात्रलियोम जोगा
नहि बाके पीन्ड अकारन मायातो, अधर अमीरस भोगी(टेर)
साधो रे भाई धारा गिगनम एक ही धारा,
तो दशवां द्वारा न्यारा।
त्रिकुटि महल म अटल जोत है
तो चहुं दिशी आत्म जारारे।१।
साधो रे भाई चांद सुरज दोय दीपक जोया,
तो तत्वांरो तेल कढायो।
सुन सिखरम अटल जोत है,
तो अवधु का रुप सवाया।२।

साधु रे भाई पांच पचीसाँ न धुनीम जारा,
तो उडती सी राख रमाई।
लेकर मुकदर नानी रे कुटी
तो रतन पदारथ पाया।३।
साधो रे भाई सरगुण चोलानिगुंन डवी,
तो त्रिगुण आँच लगाई।
कहत कबीर अक्षय घर लावणा,
तो गेवी संत सिधारारे।४।

भजन नं० ८४

काया नगर मंझारारे हरला, जिन खोजा निस्तरा (टेर)
लागी लगन मेर हीरदय में बसगी, तो कुण है मेटनहारा।
मस्तक उपर लिखीय फकीरी, तो लेख लिखा करतारा।१।
सिंह और स्यार रहते हैं वन में, तो चरते हैं न्यारा २।
एक दिन मेल मिलो मछलीको,तो सिंह न स्यार सुधारारे।२।
गिगन मंडल में अमीरस कुंवा तो जहाँ अमृत का झारा।
सुगरा मानस पीपी छकगा, तो प्यासा जात गंवारारे।३।
सतगुरु मिला म्हारा शांशा मिटगा,तो खुलगा भरमका ताला
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तो नाम लिया निस्तारा।४।

भजन नं० ८५

मुकति चयितो रलजा शब्द में,धारा होयला सिखर घर डेरा

म्हारा विरारे कायाको कारीगर है माया माहीं (टेर)
धरती सरीसा धीमा२ चलना तो पवनसरीसा झीणा म्हा०।१
समद सरीसा सतगुरु करना तो नीर सरीसा चेला म्हा०।२
काया नगरम.हाट हीरां कीतो करनीकी कुंजस खोलो म्हा।३
गगनमंडलम अमियां झरत है तो,विरला हरिजन पींवम्हा।४
राणीरुपादे उमंसिंह की चेली,तो सत अमरापूर पोथोम्हा।५

भजन नं० ८६

मान अमल उगो ये म्हारो माय, गुटक लागि नामरी (टेर)
संत अमल ऐसो उग्योरी, ज्यो चंद परकास।
संहस किरण सुहावणीरी पडीह आकरोडी घान।१।
बिन माली एक बाग लगायो, बिन पाणी फल जाय।
अमर म अमल उग्योरी, गायक फिर २ जाय।२।
बिन बादल वर्षा मंडोरी, बिन बिजल परकास।
सुकोई अमर ओलरोरी, देख सखी बरसात।३।
ये मावा बिरलां लियारी, कर काया को दान।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, जनम मरण किया दूर।४।

भजन नं० ८७

किलीया राम भजो मेरा भाइ रे,
तेरी खेती सफल हो जाई कि० (टेर)

तनकी चइसी मनकी मांडल, लोभकी लाव वगाई, ।
सुरत नीरत का बना बैलिया, ठेठ लाय ठहराई ।१।
तीन तलको बनी चापलो, पाट बनी महामाई ।
बंक नाल जबधोरा चाल्या, जब खेती लहराई ।२।
काट पीट भेली कर लीनी, पांचु बलदा गाई ।
प्रेम धर्म जब पवन चली, कीडि २ रडकाई ।३।
कोट किला सारा भर लीना, ओर भरलीनी खाई ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, घडी तो घडी सिरकाई ।४।

भजन नं० ८८

करो जतन सखी सांई से मिलनका (टेर)
गुडिया गुडवा सुप सुपलिया,
तज दे बुधि लरकडया खेलनकी ।१।
पितर देवता भुइयां भवानी,
यह मारग चौरासी फसनकी ।२।
ऊंचा महल अजब रंग बंगला ।
सांई की सेज जहां लगी है फुलनकी ।३।
तन मन धन सब अरपन करी वहां ।
सुरत सम्हार परो पइयां सजन की ।४।
कहे कबीर निर्भय होय हंसा
कुंजी बतादूं ताला खुलन की ।५।

भजन नं० ८९

घुंघट का पट खोलरी तोय पीव मिलेंगे (टेर)
घट २ रमता राम रमइया, कटुक वचन मत बोलरी ।१।
रंग मलहम दीप बरत है, आसन ते मत डोलरी ।२।
धन जोबन का गर्बन कीजे, जुठा पचरं चोलरी ।३।
जोग जुगत से रंग महल मे, पिय पायो अनमोलरी ।४।
कहे कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोलरी ।५।

भजन नं० ९०

अवधु भूले को घर लावे, सो जन हमको भावे (टेर)
घर मे भोग जोग घरही मे, घर तजी बन नहिं जावे ।
बन के गये कलपना उपजै, तबधों कहां समावै ।१।
घरमे जुगति मुकती घरहीमे, जो गुरु अलख लखावै ।
सहज सुन्य म रहै समाना, सहज समाधि लगावै ।२।
उन मुनि रहे ब्रह्मको चीने, परम तत्व को ध्यावे ।
सुरत निरत से मेला करके, अनहद नाद वजावे ।३।
घरमे बसत वस्तु भी घर हैं, घर ही वस्तु मिलावैं ।
कहे कबीर सुनो हो अवधु, ज्योका त्यों ठहरावै ।४।

भजन नं० ९१

म अमली हरीका नामकी, म्हान बायडली आवे (टेर)
अमल तमाखु छुतरा, चढ उतर जाव ।
नसो आव हरिका नामको, दिन दूणों हि आव ।१।

तनकी छोला मन का छुतरा, गुरु घोटर प्याय ।
सतसंगत म बैठता, रंग दूणों ही आव ।२।
प्याला पिया राजा भरथरी, गुरु गोरख प्याव ।
धन २ मा मैनावती, सुतन अमर कराव ।३।
प्याला पिया रस प्रेमका, रस ढुल २ जाव ।
मेडत वंश राठिड मे, बाई मीरा गाव ।४।

भजन नं० ८२

हो बाजीतो लागी पीव से आली अवक चूक मत जाय(टेर)
चोपड खेलुं पीव सेरे, तन मन बाजी लाय ।
हारी तो पीयकी भइरे जीतूँ ती पिय भयो मोर ।१।
चोसरिया के खेल मेरे, जुगम मिलन की आस ।
नर्द अकेली रह गई रे, नहि जीवाण की आस ।२।
चार वरण घर एक है रे, भांति २ के. लोग ।
मनसा वाचा कर्मणा कोई प्रीति निभावे ओर ।३।
लख चौरासी भरम २ पोपे अटकी आय ।
जौ अन्नके पो नापडे फिर चौरासी जाय ।४।
कहे कबीर धर्मदाससे रे, जीती बाजी मत हार ।
अबके सुरत चढायदेरे, सोई सुहागिन नार ।५।

भजन नं० ८३

बटा उडा चेतन रहना भाई रे

तेरा करोडों पाप धूल जाई (टेर)
रे मगना हाथी आन झुका है, सुरा लेत लडाई।
कट २ शीश पड धरणी पर, खेत छोड मत जाइरे ।१।
रे राम नाम की अर्णी झुकी है, तूंतो खरो सिपाई।
सत सुमरन की टाल बनाले, जम की चोट उकाई रे ।२।
रे कच्चा २ कोट पका दरवाजा, गढपर फीरी दुहाई।
गम २ बाज हुई घट भीतर, जिन खोजी तिन पाई रे ।३।
रे गुरुका ज्ञान शव्दका गोला, भरम की बुरुज उडाई।
रामा नन्दका भणत कबीरा, गढ चढ नोबत बजाई रे ।४।

भजन नं० ८४

चल सतगुरुकी हाट ज्ञान बुध ल्याइये
कीजे साहिब से हेत परमपद पाइये ।१।
सत गुरु सब कुछ दीन्ह देत कछु नारयो।
हमहि अभागिननार सुख तजी दुख लयो ।२।
गई पीया के महल पिया संग ना रची।
हद कपट रयो छाय मान लाजा भरी ।३।
जहवाँ गेल सिलहली चढों गिर २ पडों।
उठौं सम्हार २ चरण आगे धरौं ।४।
जो पिय मिलन की चाह कौन तेर लाज हो।
अधर मिलोना जाय भला दिन आज हो ।५।

भला बना संजोग प्रेमका चोलना ।
तन मन अरंपो शीश साहिब हंस बोलना ।६।
जो पिय रुठे होयं तो तुरत मनाइये ।
होईय दीन अधीन चूक बकसाईये ।७।
जो पिय होयं दयाल दया दिल हेरि हैं ।
कोटि कर्म कट जाय पलक छीन फेरि हैं ।८।
कहे कबीर समुझाय समुझ हिरद धरो ।
जुगन २ करो राज औ दूरमति परि हरो ।९।

भजन नं० ८५

अजर अमर इक नाम है, सुमिरन जो आवे (टेर)
बिनहि मुखके जप करो, नहिं जीभ डुलावे ।
उलटि सूरत उपर करो नैना दरशावे ।१।
जा हंसा पछिम दिसा, खिरकी खुलवावो ।
तीर बीनीके घाट पर, हंसा मल नहाबो ।२।
पानी पवन की गम नहिं, वोहि लोक मंझारा ।
ताहि बिच इक रुप है, वोहि ध्यान लगावो ।३।
जिमी असमान जहां नहिं, वो अजर कहावे ।
कहे कबीर सोइ साध जन, वा लोक मंझावे ।४।

भजन नं० ८६

बरसेरे बदरिया सावनकी, सावनकी मन भावन की (टेर)
सावनमे उमग्यो मेरो मनुवा,भनक सुनी हरि आवन की।१।

उमड घुमड चहुं दिसीसे आयो, दामिनि दमके झर लावन की।२।
नान्ही २ बूँदन मेहा बरसे, सीतल पवन सुहावन की ।३।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर, आनन्द मंगल गावन की ।४।

भजन नं० ९७

दर्द दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा ।
एक अकीदाले रहै एसे मन धीरा ।१।
प्रेम पियाला पीवते बिसरे सब साथी ।
आठ पहर यों झुमते ज्यों भाता हाथी ।२।
उनको नजर न आंवते कोई राजा रंका ।
बंधन तोडे मोह के फिरते निहसंका ।३।
साहिब मिल साहिब भय, कछु रहि न तमाई ।
कहे मलुक तिस घर गये जहँ पवन न जाई ।४।

भजन नं० ९८

घटहि मे चंद चकोरा साधो, घटहि में चंद चकोरारे (टेर)
दामिनि दमकै घनहर गर्जे, बोले दादूर मोरारे ।
सतगुरु गस्ति गस्त फिरावे, फिरता ज्ञान ढंढोरारे ।१।
अदली राज अदल वद स्याही, पांच पचीसों चोरारे ।
चीन्ही शव्द सिंह घर कीजे, होना गारत गोरारे ।२।
त्रिकुटि महल में आसन मारो, जहन चले जम जोरारे ।
दास गरीब भक्ति को कीजो, हुआ जात है भोरारे ।३।

भजन नं० ९९

समझि बुझिरन चढना साधो खुब लडाई लडना है (टेर)
दम २ कदम परे आगेको, पीछे नाहिं परना है।
तिल २ घाव लगे जो तनमे, खेत सेति क्या टरना है ।१।
शब्द खैंचि समसेर जेर करी, उन पांचों को धरना है।
काम क्रोधमद लोभकैद करि मन कर ठौरे मरनाहे ।२।
खडा रहे मैदान के उपर, उनकी चोट संभरना है।
आठ पहर असवार सूरत पर, गाफिल नाहिं परना है ।३।
शीश दिया साहिब के उपर, किसके डर अब डरना है।
पलटु बिना रुंडके उपर, अब क्या दूसर करना है ।४।

भजन नं० १००

कैसे जल भरत गगरिया, तेरी भीजी न नेक अंगुरिया (टेर)
सतगुरु घाट गई विनु जाने, पैरीन चीन्ह पकरिया।
सागर थाह अथाह अगमको, कोइ भर नहिं जान अनरिया ।१।
सास ननद के अनंद पिया मोरे, डारेगें फोड गगरिया।
रीति जात फिरी बिनु पानी, मानत नाहिं बहुरिया ।२।
सास ससुर जेठ जुलमाई, सांइन सील संवरिया।
बीतत दिवस रही अब रजनी, खुलतन प्रेम किवरिया ।३।
तुलसी तावदास यहि औसर, पियसंग पैठ नगरिया।
सूरति साज सजी नभ मंडल, अंदर बीच डगरिया ।४।

भजन नं० १०१

हम कैसे आवें मुस्कील है गैल तुम्हारी (टेर)
काम क्रोध का पड रहा फंदा, दिन २ सिरपर दुना धंदा।
लोभ राहुने ग्रसलीया चंदा, रैन भइ अंधियारी।१।
जव कुछ आगे पैर बढ़ावें, ठौर ठीकाना कहिं न पावें।
घबरा कर हम उलटे आवें, दिलरहि दुविदा दारी।२।
उलटे आवें तो दुख पावें, जगकी झलसे जल २ जावें।
अधम बीचमें रुदन मचावें, हालत बुरी हमारी।३।
लगे आप ज्यों लकड़ी माहिं, धुन निकसन का रस्ता नाहिं।
नाथ त्योंही क्या हम जल जाहिं, तुलसी का दुखभारी।४।

भजन नं० १०२

पीले प्याला हो मतवाला, प्याला प्रेम हरि रसकारे (टेर)
बालापन सब खेल गमायो, तरुण भया तिरीया बसकारे।
वृध भयो कफ वायुन घेरो, खाट पंडा चसका नहिं जारे।१।
पाप पुन्य दोनु भोगन आया, को तेरा अरु तूं किसकारे।
जब लग जीवो नाम भजनकर, धन जोवन सपना निशकारे।२।
नाभी कमल महै कस्तुरी, कैसे भरम मिटे पशुकारे।
बिन सतगुरु इतना दुख पाया, जैसे मीरग फिरे वनकारे।३।
नर चौरासी उबरो चाहे, छोड़ कामिनी का चसकारे।
चरणदास सुखदेव कहत है, नख सिख सर्प भरा विषकारे।४।

भजन नं० १०३

हंसा चाल बसो उन देस जहाँ का बसा फेरन मरे (टेर)
जहाँ अगम निगम दोय धाम, वास तेरा परसं पर ।
जहाँ वेदों की गम नाय, ज्ञान ओर ध्यान भी उर ।१।
जहाँ बिन धरणी एक बाट, चरण बिना गमन करे ।
जहाँ बिन श्रवण सुन लेय, नैनों के बिना दरस करे ।२।
जहाँ बिन देही एक देव, प्राणों के बिना स्वांस भरे ।
जहाँ जग मग २ होय, उजाला दिन रात रहे ।३।
जहाँ प्रेम नगरिया के घाट, अधर दरियाव बहे ।
जहाँ सन्त करें अस्नान, दुजातो कोई नायन सक ।४।
जहाँ नाय से सुख होय, तपत तीनों तन की मिट ।
तेरा जनम मरण मिट जाय, चौरासी का फंद कटे ।५।
गुण गावे भानी नाथ, अमर पुर बास करे ।
यों कहते नाथ गुलाब, अनन्द में मगन रहे ।६।

भजन नं० १०४

तेरा सिरजन हारा सुरता कौन, मगन होय आप चली (टेर)
दयाशील सन्तोस पहर में, दुरमति डार दई ।
मान अपमान दो उधर पटके, अगम की राह गही ।१।
भाइ बन्धु ओर कुटुम कबीला, सबसे तोड़ दई ।
लोक लाज कुल की मर्यादा, शिर से तार धरी ।२।

सोला सिंगार बत्तसौं आभरण, माँग सिंदूर भरी ।
चोमुख दिवला लिया हाथ में, पीया से मिलन चली ।३।
चली शीघ्र प्रीतम पे पहुंची, आनन्द अधिक भरी ।
कहत कबीर सुनो हे हेली, खील गई मुक्त कली ।४।

भजन नं० १०५

हरीजन उठे छावनी छाई म्हारी सुरता उतपति परलन होय
पाँच तत्व तीनों गुन भेला, गढ़ पर भई लड़ाई ।
सतगुरुवाँ बासन्दी दीनी, भोज किला पर चढ़ आई ।१।
ज्ञान गरीबी का गोला सनाया, गुन तुन फौज वनाई ।
सुमरण रुपी सेल लिया है, जमडां की फौज हटाई ।२।
अधर सदर दोयदेस निवाना, जठे सुरत लगाई ।
दृढ आसन निश्चल होय बैठा, संत करह बदसाई ।३।
तीर्थ देवरा सब फिर आई, भोत करी चतुराई ।
सांवरियो मेर नजर न आयो, गुरु बिन राह नहिं पाई ।४।
सत गुरु सैन सबद की दीन्ही, चेलालई उठाई ।
भानी नाथ गुरांक सरण, अवगति लखी नहिं जाई ।५।

भजन नं० १०६

उठ वीरहण मोसर माण पीव थार घर आयो (टेर)
आलीये जाकादेस बीहंग पर बास, तबक चोदा पूर छायो ।
छाय रहो तीनों लोक अमर, यो तो गयोपन आयो ।१।

आलीये जांक मिलन से आनन्द, जनम ओर मरण छुटायो ।
बिन बादल बिन इन्द्र सहज सुमिरण झडलायो ।२।
आली ये तूंतो देख बदन को रुप, सुरत विरहिन पर पायो ।
धुवां से बारीक पिंड ब्रह्मांड समायो ।३।
आलीये बाकी अदभूत सोभा देखि गगन बीच चंदखिल आयो।
सहस कलालियां भान, भान बिन दिन उगी आयो ।४।
आलीयम्हान गुरु मिला गुलाबनाथ, गुरांस अमर पद पायो ।
गुण गाव मानीनाथ दिनो दिन होत सवायो ।५।

भजन नं० १०७

हायम्हारी सुरता होजा भजन कीलार,दिखाल्या उपिषकीपुरी
थारोपियो वसये सतलोक, मिलायलाउ अबकी घड़ी (टेर)
हांयेम्हारी सुरता चाल भालं सुभाल,झोलाकी भूंडी एक घड़ी
म्हारी सुरतां अरहट चालबारों मांस इन्द्रकी लागी एक झड़ी१
हांयम्हारी सुरतां कांकड़ बरिडारोबास,छोड़ना भोली लेजासी
म्हारी सुरतां सुमरण सैल सम्भाल, जमाक गुरु गमगासी ।२।
हांयम्हारो सुरता तेलीको काढ तेल,बाकीम रगी खलही पड़ी
म्हारी सुरता गावे नाथ गुलाब, हाथमे गुलाब की छड़ी ।३।

भजन नं० १०८

पिया मेरा बसय अभरपुर मिलना किस बिध होय ।
गुरु बिन पंथ ढुहेलडा (टेर)

बिंसम नदी नाव जोजरी, केवट मतवाल ।
पांचसखी बैरण भई, किस विधि उतरांगा पार ।१।
तीनगुणां हंदी पालखी, जुपिया चार चकोर ।
जाय उतारी दाता उनघरां, पीछ आवणन होय ।२।
उर्ध कुई मुख सांकड़ो, भरियो झोल झकोल ।
भरियोडी गागर गिर पड़ी, उर्वीमुखड़ो जीमोड़ ।३।
मे तन पुंछू ये सखी, तेरा कुणसा जी देस ।
अखंड उजालो होय रयो सखी व मेरा देस ।४।
रतनाहन्दी गांठड़ी, जामे हीरा २ लाल ।
हरी जन सोदाकर चला मूरख मूल गमाय ।५।
चढ्यो यं कवीरो गढ़वा कड़ा, आदूस वद पिछाण ।
सहजा २ रम रया, डुबा जिन सिर भार ।६।

भजन नं० १०८

मैं मरीतो प्रीतम पाया जी, लिखवा लिया अमर पटाजी (टेर)
नाम मरती ना पिव पाता, म मरती मालिक दरसाता ।
छोड़ दिया सब जग से नाता
मैं पिय से हस बतलाई, वह बैठ अटल अटारी ।१।
मेरे पिया का उँचा बासा, जहँ माया का सर्वस नासा ।
जहँ बिन भान होय परकासा,

में देखत आनन्द छाया जल बर्से बिना घटा री ।२।
जद मेरे सतगुरु महर करी है, मेरे गल पर छुरी धरी है ।
सबसे पहले आप मरी है,
में गल कुं काट बगाया, बिन सस्त्र गला कटा री ।३।
मरनो हतो पली मरनो, पीछ मरनो बिपत को भरनो ।
हे के शोले खुदको सरणो,
तेरा आवागमन मिट जाई, बिसयन से सुरत हटा री ।४।

भजन नं० ११०

सून ओ मित्र खेती वाला
भजन विना मिरगान खेत उजाड़ा (टेर)
पाँच मीरग पचीस मीरगली, तो जामे दोय सिकारी ।
अपने २ रस के भोगी तो, चरत पीवत न्यारा २ ।१।
आमा खाय आमली खाइ तो, खा गया केसर क्यारी ।
काया नगर म कछु नहिं छोड़ो तो, फीर २ खेत उजाड़ा ।२।
एक डार जम दुतों की आई तो, बैठी आय सीराने ।
हो हो करता काल जो आया तो भाज गया रखवाला ।३।
इस मिरगान किस विध मारूँ तो, हाथ नहीं हथियारा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो तो, सुमरण सेल संभारा ।४।

भजन नं० १११

हाय सुरता एकरसातूम्हारा मँदर आव, दिखा उतन भाव नगरी
। टेर ।

हेली तेर मदरिया में दरस कोनी देव, झालर न कुटा सार किसी
हेली तेर दिवलाम दरसकोनी तेल, बातीन वाला सार किसी ।२
हेली तेर मायलान धोले चीत लगाय, वाहर से धोयाँ सार किसी
हेली तेर बिछीयाँ को बाज झनकार, काया म तेर झनक पड़ी
हेली तेर मिल गया नाथ गुलाब, लगाय दई ज्ञान की छड़ी ।५।

भजन नं० ११२

म्हार देशांकी संगज ना मिलो म्हारी आली ।
किण सँग करूं ये सनेह ।।
कुण सुण किससे कहूं म्हारी सुरता
म्हार मन की बात आलीय सूरताये (टेर)
म्हेतो पूर्विया पूर्व देस का म्हारी आली ।
बोली मलखपन कोय ।
म्हारी तो बोली से लखे म्हारी सुरता,
ध्रव पूर्व का होय सूरताये ।१।
केतो तिल कोरा भला म्हारी आली,
नातर तेल कढाय
अदबीचली कुलर वुरी म्हारी,
दोनु दीन से जाय ।२।
केतो निज ज्ञानी भलो म्हारी सुरता,
केतो भलोय अज्ञान ।

अध बी-जलो मूर्खं बुरो म्हारो सुरता,
फाटे दुस समान ।३।
फलपाका बेली तजा म्हारी सुरता,
सुंगध भई चारों ओर ।
सुंगध भइतो के हुयो म्हारी सुरता,
नहिय बीजको नास ।४।
धूं लागी बेली जली म्हारी सुरता,
भयो ये बीज को नास ।
कहत कबीर धर्मी दास से म्हारी सुरता,
नहिय उगन की आस ।५।

भजन नं० ११३

ने तो आज परीतम निरख लियो,
मेरी मानो सहीमत मानोरी (टेर)
डाल २ में पात २ में तो सब वृक्ष नम छायरयो ।
नीदा तबकम श्याम हमारो तो नाजीवन ना मरण भयो ।१।
पास खड़ा पीव नायपिछाणा तो सतगुरु सेन दइ जिनिया ।
रख निरख मेर हिव्रडपर ठाडा तो हरखभयों मोरी छतिया
गला तो पिंगला संग श्यामकतो सुखमनसेज अधर तकिया ।
डदो तो खोलमिली प्रीतमसे, तोखुलगई आंखकरी बतियां
ाज श्यामन मनैना भी देखातो झीलमिल २ होय रही ।
रता जाय गिगन चढ़ बैठी तो उगियायो भान गइ रतियां ।४।

नाथ हरी दस्तक धरा मस्तक दिलडारा धोखा दूर किया ।
नाथ गुलाब गया दुख मेरा तो मुखड़ा सूँनेहरा लाग गया ।५।

भजन नं० ११४

सबलन ढूँढनम गइये उँको पार न पायो सतगुरु न० (टेर)
एक जोगी एक बालकाये दुजा दुधा धारी ।
हाथ कमंडल प्रेमकाये वतो सुघड़ खिलाड़ी ।१।
य जोगीकी गुदड़ी ये हीरा रतन जड़ाई ।
नाजाणुं किणन दे गयाये बांका दिल दरियाई ।२।
वे जोगीकी रावटी ये फुलड़ा सेज बिछाई ।
ना जांणू कितरम गया यें बाकी खब रन आई ।३।
डुंगा जलकी मांछलीय नदियां चढ़ आई ।
बारी जाउं रइदास पर ये गुरु ज्ञान बताई ।४।
शांशा तो शीतल भयाये दील घेर घुमेरुं ।
परमानन्द के प्रेम सेहे कहे दास कबीरुं ।५।

भजन नं० ११५

कित रम गया जोगी मढी सुनी, मढी सुनीरे कुटी सुनी (टेर)
यो जोगी है कैसा गैला, धोवे मढी और पहरे मैला ।
छोड़ दिया इन पिछला पला, बोतल नहिं रे हुआ मोनी ।१।
जोगीकरे मंढी की रक्षा, लाला इसको देता भि
इसकी रक्षा कौन करेगा जलगई लकड़ी बुझी धुनी । ।

रतन कोठरी गुप्त सिघासन, जहां लागा जोगी का आसन ।
छोड़ दिया इन तुंबी वासन, डिग गया भवन लगन थूनी ।३।
जद सतगुरु ने मारा हेला, छोड़ गुरु एक धाया चेला ।
फुल कहे दो दीन का मेला, कहां गइ रे अफलातुनी ।४।

भजन नं० ११६

हंसला नजर नहि आया हो, गुरुजी म्हार

बोलता नजर न० (टेर)

पेड़ बिना एक तरवर देखा, तो पात नजर नहिं आया ।
म्हांरा प्रेम गुरु एसा सैलानीतो वाहीं बैठ फल खाया हो ।१।
सुंड विना एक हस्ति देखा तो, पांव नजर नहिं आया ।
म्हारा ज्ञान गुरु ऐसा सलानीतो, अंकुस देर चलाया हो ।२।
पाल विना एकसरवर देखा तो, नीर नजर नहिं आया ।
म्हारा प्रेम गुरु ऐसा सलानीजो, वहां ही बैठकर नायो हो ३
राजा बिना एक नगरी देखी तो पीरजा नजर नहिं आई ।
म्हारा ज्ञान गुरु ऐसा सलोनी तो वहां ही न्यान चुकायाहो ४
उलटी वंबी सर्प न डस गई तो छाइने बन खाया ।
रामा नन्दजी का मगणत कबीरा तो बावल बेटी जाया हो ।५।

भजन नं० ११७

दिलदरिया उड़ी लहरी मवारीसाधो सतगुरु सवदांम हेरी (टेर)

पेड़ बिना एक तरवर देखा तो, पात नहीं वाक डारी।
धुप छायां बान कुछनहिं व्याप तो फल लाग चहुं फेरी हो ।१।
इस काया में सात समुदर नोस नदियां गहरी।
एबड छेबड़ आमा इमली तो विच अमरितकी बेली हो ।२।
इस काया म बाजा बाज, बज रहा अठ पहरी।
ढोलक ताल पखावत बाज तो बंसी बाज गहरी हो ।३।
उलटा बाण सिखर धर मारा तो जाय लगा उन सेरा।
उनरे सेरपर आप निरंजन, जहां लागी धुन मेरी हो ।४।
अनगिन ज्ञान अगम से आया तो, क्या पुछो गुरु मेरी।
रामा नन्द जीका भगणत कबीरा तो निरगुणमालाफेरी हो।५।

भजन नं० ११८

मेरी चुनरी म लग गया दाग पिया (टेर)
धोवत फीरी दागनहिं छुटे, मेरा मन मूरख अभिमान किया।१।
सतगुरु धुविया मिलास हमें, मेरा दाग जिगर का साफ किया ।२।
हीरा पना रतन अपारा, कोटि भानु परकास लिया ।३।
कालुराम कहे सुनु सजनी, रामरतन धन चाख लिया ।४।

भज़न नं० ११९

मारग बांको हे योगा, राम को (टेर)
गिरवर चढतां योगी गिरमत जाना, इधर उधर काई झांकोये ।१
खांडा की धार नुकसं पैनी, असल सुई को नाको ।२।

धुनी तपो तो जोगी धुनीजला दूं, मुड मुडाया जोगी क्याको ।३।
कहत कबीरसुनो भाईसाधो, हरि के चरण चित राखो ये ।४।

भजन नं० १२०

मित्र नहिं हंसलो थारो ये रंगीली काया मित्र नहिं ह० (टेर)
परदेशी एक हंसलो जी आयो, दिलस अखन कंवारो ।
काया नगरम ब्याह रचो है तोरल मिल वांधो घरवारो ।१।
तूं काया मेरी सख सुंदरी तो मैं हूं पीव तुम्हारो ।
थारो हंसा जी मन नहिंह भरो सो तो अंतपंत जाण वालो ।३।
काढर लाउं कढायर लाउं तो, फिर घिर लाउ उधारो ।
थान भूखो कदे नहिं राखूं तो सूंप दियो घर सारो ।३।
काया जाण महं सलान ठगलूँ तो हंसलो अजब ठगोरो ।
थारा सरिसी काया भोत ठगी है तो ठग२ खायो मुगसारो ।४।
वीखर गई कागद की सी गुड़िया, तो महिमा मिल गयो गारो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तो लादचलो विण जारो ।५।

भजन नं० १२१

सोहं सवद लखा पल माहि तो भरम का कोट उड़ाया
सो धन गुरां सोहं सँवद सुनाया (टेर)
सोहं सवद अगम से आया तो, पक्षीम देस पलटाया ।१।
पलटा पक्षिम सिखर जाय बैठा तो अनहद आसन लाया ।२।

चढ़ गया सीखर जब गरजा तो, तो रोम रोम जस गाया ।३।
दाता हरी सिंग पुरण पाया तो, सुरजा राम जस गाया ।४।

भजन नं० १२२

म्हार देस की म देउर निसानी तो आर पार एक सारा
साधो भाई ऐसा है देस हमारा (टेर)
म्हार देस म चांद कोनी चानना, तो ना कोई रैन अँधियारा ।१।
म्हार तो देस म सो व कोनी जाग, तो अटल रव एक सारा ।२।
म्हार तो देसम मर कोनी जनम, तो, ना कोइ लेव अब तारा ।३।
दाता हरि सिंग काटी चौरासी, सुरजा राम उनदेसांरा कासी
तो हार जीत एक सारा ।४।

भजन नं० १२३

साधो भाई ऐसा मै अनघड़ पाया (टेर)
हटा वो अमर कभू नहिं मरता, तो नित २ रहे सवाया ।१।
ना वो अन्दर ना वो बाहर, अद बिच आसन लाया ।२।
ना वो उँचा ना वो नीचा, अधर में रहा ये समाया ।३।
ना वो गुंगा ना वो वोल, ना वो परगट ना वो ओल ।।
सतगुरु भेद लखाया ।४।
दाता हरि सिंग सेन लखाई, सुरजा राम समझ करपाई
जीवका बंध छुडाया ।५।

भजन नं० १२४

झुठी तेरी तेर मेर कौन तेरा है,
पक्षी के समान जगत मेरे न बसेरा है (टेर)
तात मात भ्रात जो तेरा परिवारा है,
संग न चली जो तेरी व्याइ दारा है।
दुनियाका समासा मोला दिन चारा है,
रस भोगोंके कारणे चौरासी का फेराहै।
हारका विचार कोई गुनवान करता है।
अन्न से तो पेट जमाना सारा भरता है।
पांच भूत छटी तृष्णा मन नहि मरता है,
मन नहिं मरता है जव तक साफ अंधेरा हैं।२।
रंग मे भंग डारे पांच जोगनी,
भोगे बिना छोडदे कोनी तीन लोकनी।
जै कोई इनत जीतले फिर और रोगनी,
देखरे गवार कैसा सुन्दर डेरा है।३।
ब्रह्म ज्ञानी सोई जो कोई मनन डाटले,
भजनों की शक्ति अवस्था तीनु काटले।
नानु गुरु कगये वन्दे निर्गुन छांटले,
स्वामीजी के वचनों पर विश्वास मेरा है।४।

भजन नं० १२५

वन्ता क्युन गरीबरे ऐसी क्या गुमराई (टेर)
कई २ हो गये वंदे कई २ होवेंगे
राजा रंक फकीर रे रहने न पाई ।१।
दिन २ वंदा तेरा नेडरआवे,
भजले मना रघुवीररे मानुष तन पाई ।२।
जम राजाकी तलवी जो आवे,
गलमे घाल जंजीर रे जम ले लेव ढकुराई ।३।
नानकदास उदासी गावे,
एक दिन मरगा सरीर रे ऐसी होती आई ।४।

भजन नं० १२६

पकड चम्पाकी डाल सुहागिन क्युँ खडी ।
के तेरा पीवर दूर धरां सासू लडी ॥
चलरे मुरख गंवार तुझे मेरी क्या पड़ी ।
मेरा पियाजी गया सत लोक संदेसो लियां खडी ॥
तेरा पियाजी गया सत लोक तुझे क्या कह गया ।
जड़ गया सजड कीवाड़ कुंजी संग ले गया ॥
दोय २ दीपक जोय मंदिरीयाम पोडती ।
मेर पियाजी बिना सुनी सेज नयन भर जोवती ॥
आडा उडदके बीच वहे दोय पंखिया ।
मेरा पियाजी मिलन का जोग फरुके अँखियां ॥

यं सखीयारी पाल सखी सुरता चार हैं।
पति भरता है एक तीन बेकार है ॥
चावलास भरी पे चंगेर उपर हरकी आरसी।
होवे कोइ संत सुजान लखे मेरी फारसी ॥
इन सखरियारी पाल प्रेमी हंसा पावणा।
मंगल कथगे कबीर मुड नहि आवणा ॥

भजन नं० १२७

साधो भाई मानो भाव हमारा, मै हुं सेवक तुम्हारा (टेर)
गोरीका पुत्र गणेश भणीजे, तो अंग अखन कंवारा।
रीध सीध नारी दोनु चरणाम लोट, तो पुजा करे संसारा ।१।
निरगुण का गुरु भेद बतायो तो, सरगुण नाम तुम्हारा।
जिन सेया उन्ही फल पाया तो, उपजा है ज्ञान अपारा ।२।
नाभि कलम म वसे गणेशा, तो हिरदय में ध्यान तुम्हारा।
सोहनी सीकर घर संताका वासा, तो तरवीणी हिक सारा ।३।
नाथ इमरती मिला गुरु पुरा, तो भेद बता दिया सारा।
राम नाथ सरण सत गुरु की तो, मिल गया शब्द एक सारा।४।

भजन नं० १२८

बारी २ रावलिया जोगी तन घट निदरा त्यागो जी
निन्दरा निवारो भोला नाथ जी (टेर)

कौन तुम्हारी वहिन भानजी, कौन तुम्हारी माताजी ।
कौन तुम्हार संग चलगी, कौन करगी बाताजी ।१।
धुनी मारी बहिन भानजी, धरती मारी माताजी ।
पवन हमार संग चलगी, रैन करेगी बाताजी ।२।
आसन बांध सिघासन बांधु, बाधुं काची कायाजी ।
काना माला मुँदरा बांधु जोग कहाँ से लायाजी ।३।
आसन खोल सिघांसन खोलूँ, खोलूँ मारी कायाजी ।
काना माला मुदरा खोलूँ, जोग अगम फरमायाजी ।४।
उठत मारुं वैठत मारुं पास जागत सुताजी ।
तीन लोक म भंग पसारुं, कहुं जावो अवधुताजी ।५।
उठत सिमरुं बैठत सिमरुं, सिमरुं जागत सुताजी ।
तीन लोक से न्यारा खेलुं मैं गोरख अवधुताजी ।६।

भजननं० १२८

तुम उवी हम लाज भरे हैं, लाज भरे दो नैनाजी ।
लाज भरे दो नैंना ये, घर जावो दूती वहिनाये (टेर)
इन्द्र लोक से चली अपसरा; कबीर करुं भरतारा रे ।
गोरी २ बइया चूंडला सोहे, गल गोतियन का हारा रे ।१।
जोडो जुडावो रइदास बुलादूं, भांत दिवावो तो नाभाजी ।
वे जो बुनावो तो दास कबीरा ए मेरा कामा जामाजी ।२।
गोरख मोया मछंदर मोया, मोया जटा धारीजी ।
बेद वाँचता ब्रह्मा मोया तेरी कौन विचारी जी ।३।

अमर वर्षें धरती भीज, पथर का क्या भीज री।
नाटक चेटक मत कर दुती कबीरा क देना रीजेरी।४।
नाम कबीरा जात जुलाहा, मैं काशी का वासीजी।
मेरे तो मन में एसी आव एक माय दुजि माँसी जी।५।
मैं सहिवन एसा रट लिया, पोलिया काया तागा जी।
कहत कबीर सुनो ए दुती जल में आग न लागा जी।६।

भजन नं० १३०

मेरा गुरां पिरान राम न राम, मेरा साध संतन राम राम
थोरा भाव राख जी राम २।
भगती करांगा फेर मिलांगा याद राख जो राम २ (टेर)
कुव २ केवडो परींड नागर बेल जी भजले शंकरन।
क्यार सींचा उ केवडो या क्यार नागर वेल जी भजते शं०।१
दुध सींचा उ केवडो या घृता नागर वेल जी भजले शंकरन।
कुतो होतो डाकलु वीरा समदन डाका जाय जी भजले०।२।
कागद होय तो वांच लुं विरा कर्मन वांचा जाय जी भजले शं०।
चावल मुंग की खीचड़ी संतान नुत जिमाय जी भजले शं०।३।
तन होला मन ताखड़ी पूरा सवालाख जी भजले शंकरन।
तिलोक चंन वानियो विनव संतान सोरा राख जी भजले०।४।

भजन नं० १३१

दुनियादारी औगुन गारी, भेद मत दीजो ये
हेली निर्भय री जो ये (टेर)
दिल में फकीरी मनमें गरीबी, दया राख जो ये।
सत संगत में बैठ सुरता साँच कमाय ये ।१।
इस काया में अष्ट कमल है, ज्यारी नीगा करी जो ये।
चाँद सुरज क बीच रस्ता सिधी आज्यो ये ।२।
तर वीणी म तीन पदमी जाय बतला जो ये।
सवद झरोखा बंठ र हर न झालो दीज्यो ।३।
शील संतोस दया धर्म की वाड करिज्यो ये।
कहे कबीर सुनो ये हेली चरणोंमें रीज्यो ये ।४।

भजन नं० १३२

हंसला वेगम में धुन धर रे
व्रिणज करो बेगम में रहना जनम मरण ना डर रे (टेर)
नाम द्वादस है नहिं उनके ना कोइ धरणी धर रे।
जाप अजपा ह नहीं उनके समरण किसका कर रे ।१।
बिन धरणी एक अरहट चलता बिन बादल झरलग रे।
बिन अकास एक अमरस टपके सोई पिया तूँ कर रे ।२।
ब्रह्मा विष्णु महेस तिनु तेरी आवा गम रे।
उन अखर क लुव नहिं मात्रा, सोइ अखर रट रे ।३।

वेगम गया सो मुड नहिं आया, वहीं रहा वे थीर रे।
कह कबीर सुनो भाई साधो आपोई आप सिमर रे।४।

भजन नं० १३३

विरा मन समझियो रे लोभिय तरण को घाट (टेर)
कथनी के सुरे घने जी, सब बाँधे अनिया रे।
उत कोइ बिरला डट जी, जित वाज तलवार।१।
सुरा रण में जाय के जी, किसकी देखे बाट।
ज्यों २ पग आग धरे जी, आप कट चाहे काट।२।
हिरा बीच बजार में जी, सब निरखे साहूकार।
जितने जोहरी ना मिले जी, सबकी अकल खुवार।३।
सती जो सत पर चढ़ गई जी, कर प्रीतम से प्यार।
तन मन अपना जाल के जी, माह मिला दइ छार।४।
तन मन गुरु को सौंप के जी, सत्य शवद पहिचान।
मुस किल ते आसान हो गई, जब ते सोप दई जान।५।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, लीजो आप सम्भाल।
चेता जाय तो केत बावरे, ना खायगा तोप काल।६।

भजन नं० १३४

भजन बिना वावरे तन हिरो सो जनम गमायो (टेर)
कभी न आया संतन सरण, ना तैं हरी गुण गाया।
पच पच मरा वैल की नाई, सोय रहा र उठ गाया।१।

ये संसार हाट बनिये की, सब जग सोदे आया ।
चातुर माल चौगुना किना, मूर्ख मूल ठगाया ।२।
ये संसार फूल संवल का, सुवा देख लुभाया ।
मारी चूंच रुई निकसाई, सिर धुन २ पछताया ।३।
ये संसार माया का लोभी, ममता महम चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछुनहि आया ।४।

भजन नं० १३५

अलख संग मिलियो रे, तुम चलो दिवाने देस (टेर)
संत सदा उपदेस बतावें, घट भीतर दिदार दिखावे ।
तन मन अरपण करियो रे ।१।
सवद विहंगम बाजे तूरा, कोटि भानु जहँ चमके नूरा ।
बँक नाल सुध करियो रे ।२।
पहले पहर सुघर नर जागे, चार चोंक अनहद के आगे ।
अविचल कबहुं न चलियो रे ।३।
सुषमन देस विहंगम शीरी, माया खात फिरे चहुँ फेरी ।
भरम भूल मत रहियो रे ।४।
कहत कबीर सुनो सखी स्यानी, सांची सैन गुरु की जानी ।
अपने में आप समइयो रे ।५।

भजन नं० १३६

बागों ना जारे तेरी काया में गुलजार (टेर)
करणी क्यारी बोय के रे, रहनी रख रखवार ।

दया पोद सुखे नहिं रे, क्षमा शील जलडार ।१।
मन माली पर बोध करेरे, संयम की करवार ।
दुरति काग उड़ाय करेरे देखे क्यों नवहार ।२
मन गुलावंचित केवड़ा रे, फुल रही फुलवार ।
मुकती कली खिल रही जी, गुंथ पहरले हार ।३।
लोभ लहर गरी नदी रे, लख चोरासी धार ।
निगुरे २ वहगयेरे संत उतर गये पार ।४।
अष्ट कमल दल उपरेर, महिमा अपरं पार ।
कहत कवीर सुनो भाई साधो, आवा गमन निवार ।५।

भजन नं० १३७

अवधुसो योगी गुरु मेरा जो इस पद का करे निवेरा (टेर)
तरुवर एक मूल विन ठाडा, विन फुले फल लागे ।
साखा पत्र नहिं कछु वाके, अष्टकमल दल गाजे ।१।
चढ तरुवर दो पछी बोले, एक गुरु एक चेला ।
चेला रहा जगत चुन खाया गुरु निरंतर खेला ।२।
सुन सिखर पर गाय वियानी, रधती धीर जगाया ।
माखन था सो संतन खाया, घाछ जगत भरमाया ।३।
पंछी खोज मीन के मारग, कहे कबीदो भारी ।
अपरंपार पुरुष की सूरत, मै जाउँ बलीहारी ।४।

भजन नं० १३८

साधो मुला बेटो जायो, गुरु परताप साधु की संगत ।
खोज कुटुम सब खायो (टेर)
ममता माई जनमत खाई, पाप पुन्य दोउ भाई ।
काम क्रोध दो काका खाये, खाइ तृष्णा दाई ।१।
राग द्वेस पारोसी खाये, सुभ असुभ दो मामा ।
मोह नगर का राजा खाया, तब पुंचो उस धामा ।२।
दुविधा दादी अहंवड दादा, मुख देखत ही भूवा ।
मंगल चार बधाई बाजी, जब ये बालक हुआ ।३।
ज्ञानी नाम धरा बालक का, सोभा बरनी न जाई ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, घट २ रहा समाई ।४।

भजन नं० १३९

एजी २ साधो अबतो हरिको पायो । (टेर)
कलह कलपना मनकी मेटरी, भय ओर भरम नसायो (टेर)
रुप न रेख कछु नहिं बाके, सोहं ध्यान लगायो ।
अजर अमर अविनासी देखा, सिंदु सरोवर नायो ।१।
सबद ही सबद भयो उजियारो, सतगुरु भेद बतायो ।
सबद चिन देखो अपने को, आपाही मे पायो ।२।
जैसे कामिनि सुतले सोई, सपले सुत बिसरायो ।
जाग परी पलिका पर देखो, ना कहुँ गयो ना आयो ।३।

ज्यु कामिनि कंठ को हीरा, आभूषण विसरायो ।
संगकी सहेली भेद बतायो, मनको भरम नसायो ।४।
जैसे मिरग नाभि कस्तुरी, खोजत वन २ धायो ।
नासा स्वांस भई जब आगे, पलट निरंतर आयो ।५।
कहा कहुं वासुख की सोभा, गुंगेने गुड खायो ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, ज्यों का त्यों दरसायो ।६।

भजन नं० १४०

मेरी सुरत सुहागिन जागरी (टेर)
क्यातूं सोवे मोह नींद में, उठके भजन में लागरी ।१।
अनहद सवद सुनो चित देके, उठत मधुर धुनी रागरी ।२।
चरण शीश धर बिनती करियो, पावे अचल सुहागरी ।३।
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरता, जगत पीठ दे भागरी ।४।

भजन नं० १४१

घुंघट पट खोल दे तेरे पलकों के आगे ह राम ।
भरमन तोड़ दे (टेर)
पलकों आगे अलख बावरी, नूर रहा भरपूर ।
अन्दर बाहर सरबस भरिया, क्या नेडे क्या दूर ।१।
सिर से सकत उतार चुनरिया, परदा भरम उठाय ।
जब तो पद रस नित्य बावरी, रोम २ रयो छाय ।२।

पुस्तक लीखीन जाय बावरी, रेख खींचेना लीक।
दृष्टि न मुष्टि न आव सजनी, पवनह्य ते वारीक।३।
दरिया लहर भेदना वोरी जीव वह्य ना दोय।
एक हि वह्य सकल घट व्याणी, दिलकी दुरमति खोय।४।
हाथ में कंगन बाँध सुहागिन, काहे कुलियो दुहाग।
हाथ में मंहदी नैनों में सुरमा, सारा श्री नाथ गुलाब।५।

भजन नं० १४२

चल हंसा वा देस समुद बीच मोती रे (टेर)
चल हंसा वा देस निराला, बिन शशि भान रहत उजियाला (टेर)
जहाँ नहिं काल की चोट, अंग एक जोती रे।१।
जब चलन की करी तइयारी, दुविधा जाल फँसा एक भारी।
जहाँ कर रही सोच बिचार हंसनी सोती रे।२।
चाल पड़ी जब दुविधा छुटी, पिछली प्रीत कुटुम से टुटी।
मिल गया नीर में नीर, लगाई एक जोती रे।३।
नाथ गुलाब मिला गुरु पुरा, भानी नाथ शब्द का सूरा।
तूं उलट पवन न डाट, फटे जम पोथी रे।४।

❋

प्रकाशिका

श्रीमती दुर्गा देवी अग्रवाल

दीनबजार, जलपाईगुड़ी